अध्यापक दर्शिका

उच्च माध्यमिक पाठ्यक्रम

हिंदी

Teacher Text - Hindi

Part - II

कक्षा XII

केरल सरकार

शिक्षा विभाग

राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद्, केरल द्वारा तैयार की गई

2015

Teacher Text Development Team

SREEKUMARAN. B Govt. HSS, Parambil,Kozhikode.

DR. P PRAMOD. DBHSS Thakazhy, Alappuzha.

DR. N I SUDHEESH KUMAR, BNV V & HSS, Thiruvallam,Thiruvananthapuram

ULLAS RAJ, HDPS HSS Edathirinji, Thrissur

SMITHA S L, Govt. Tamil HSS, Chalai, Thiruvananthapuram

PRASANTH K.V, St. Joseph Boys HSS, Kozhikode

DANIEL V MATHEW, MSM HSS, Chathinamkulam, Kollam.

JUSTIN JOSE P. St. Francis HSS, Mattom, Thrissur

Experts

DR. B. ASOK
Head, Department of Hindi
Govt. Brennen College, Thalassery

PROF. R.I. SANTHI
Head, Department of Hindi
Govt. College for Women, Thiruvananthapuram

Lay Out
M A HARIDAS, Irinjalakuda

Academic Co-ordinator
DR. REKHA R NAIR
Research Officer, SCERT

Prepared by :

State Council of Educational Research and Training (SCERT)
Poojappura, Thiruvananthapuram 695012, Kerala
Website : www.scertkerala.gov.in *e-mail* : scertkerala@gmail.com
Phone : 0471 - 2341883, Fax : 0471 - 2341869
Typesetting and Layout : SCERT
© Department of Education, Government of Kerala

वक्तव्य

प्रिय बंधु,

बदलती पाठ्यचर्या और बदलते पाठ्यक्रम के साथ हमारी नई पीढ़ी बारहवीं कक्षा में पहुँच चुकी है। स्कूली शिक्षा के इस अंतिम पड़ाव के बाद अपने-अपने ऐच्छिक विषयों को लेकर यह पीढ़ी पढ़ाई ज़ारी करेगी। उस हालत में हमारे देश की पहचान की भाषा हिंदी की ओर उनको आकर्षित करने का महत्वपूर्ण दायित्व आपके हाथों में है। इस लक्ष्य की पूर्ति में आपकी सहायता के लिए यह अध्यापक दर्शिका तैयार की गई है। इसका भी सहारा लेकर आप नई पीढ़ी को हिंदी की ओर उन्मुख करके देश के प्रति अपना दायित्व निभाएँ।

शुभ कामनाओं के साथ,

निदेशक
राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं
प्रशिक्षण परिषद्, केरल

एक उड़ती नज़र

- ☞ शिक्षा का चरम लक्ष्य छात्र-छात्राओं के संपूर्ण व्यक्तित्व का विकास है।
- ☞ उच्च माध्यमिक स्तर की पाठ्यचर्या इसी लक्ष्य पर केंद्रित होती है।
- ☞ व्यक्तित्व के विकास में भाषाओं की अहम भूमिका है।
- ☞ भारतीय नागरिक के व्यक्तित्व को रूपायित करने में देश की भाषा हिंदी ने लाजवाब योगदान दिया है। क्योंकि देश भर की विभिन्नता भरी संस्कृति तथा सभ्यता का ध्वज इसी भाषा की वर्णमाला में पिरोया गया है।
- ☞ हिंदी भाषा में व्यवहृत विभिन्न विधाओं के सहारे पाठ्यपुस्तक में आशय को सम्मिलित किया है।
- ☞ कक्षा की स्तरीयता के अनुसार विधाओं में नयापन तथा विविधता है, यथा आत्मकथा, यात्रावृत्त, संस्मरण आदि।
- ☞ पाठभाग में सीधे प्रवेश नहीं करें। प्रवेश कार्य के ज़रिए पाठभाग की ओर छात्र-छात्राओं को आकृष्ट करें। इसके लिए चित्रवाचन, वीडियो आदि को अपनाएँ।
- ☞ पाठभाग की प्रक्रियाओं से गुज़रते हुए प्रसंगानुकूल निर्धारण कार्य भी चलाएँ।
- ☞ पाठ्यचर्या के समुचित कार्यान्वयन के लिए ICT का प्रयोग करें जिसका विवरण इस टीचर टेक्स्ट के उचित प्रसंगों में दिया गया है।
- ☞ पाठ्यपुस्तक के परिशिष्ट में अतिरिक्त वाचन सामग्री दी गई है। यह पाठ्यपुस्तक में आई हुई विधाओं के बारे में जानकारी प्राप्त करने के लिए है।

अनुक्रमणिका

पृ.संख्या

- हिंदी भाषाई उपागम 6-9
- निर्धारण उपागम 10-14
- अधिगम उपलब्धियाँ 15-16
- वार्षिक आयोजन 17
- इकाई एक - झंडा ऊँचा रहे हमारा 18
  - इकाई रूपरेखा 19-21
  - इकाई विश्लेषण 22-35
- इकाई दो - निज भाषा उन्नति अहै 36
  - इकाई रूपरेखा 37-40
  - इकाई विश्लेषण 41-54
- इकाई तीन - मान-सम्मान मिले नारी को 55
  - इकाई रूपरेखा 56-59
  - इकाई विश्लेषण 60-75
- इकाई चार - बुझा दीपक जला दे.....76
  - इकाई रूपरेखा 77-80
  - इकाई विश्लेषण 81-95
- परिशिष्ट 96-107

हिंदी भाषाई उपगम

हिंदी भारत की संपर्क भाषा है। संविधान से हिंदी को राजभाषा की मान्यता दी गई है। भिन्न भाषा-भाषी देश भारत में भाषाई एकता स्थापित करने का एकमात्र साधन हिंदी है। इसलिए हिंदी-शिक्षण का महत्व बढ़ जाता है।

केरल राज्य ने त्रिभाषा सूत्र को मान्यता दी है। केरल में पाँचवीं कक्षा से दसवीं कक्षा तक हिंदी तृतीय भाषा के रूप में सिखाई जाती है। ग्यारहवीं कक्षा से केरल में हिंदी द्‌वितीय भाषा है। यह वैकल्पिक भी है।

केरल पर्यटकों के लिए स्वर्गदेश है। यहाँ सेना से लेकर केंद्रीय सरकार के कई कार्यालय कार्यरत हैं। इसके साथ उत्तर-पश्चिम भारत के लाखों मज़दूर केरल में अपनी जीविका चलाते हैं। केरल के कई शहरों में अब हिंदी बोलचाल में भी प्रयुक्त होने लगी है। इस दृष्टि से उच्च माध्यमिक स्तर पर हिंदी अध्ययन का महत्व बढ़ जाता है।

यदि सही समय पर सही दिशा से सामग्री प्रदान करें तो नए ज्ञान के निर्माण करने में छात्र सक्षम रहेगा। प्रत्येक छात्र की अध्ययन गति भिन्न होती है। अध्यापिका को इसकी सही पहचान आवश्यक है। पाठ्य सामग्री का चयन इसको दृष्टि में रखकर किया जाता है। छात्र-केंद्रित कक्षा में अध्यापिका अधिगम उपलब्धियों की पूर्ति के लिए नए-नए तरीके अपना सकती है। विभिन्न जीवन प्रसंगों में आसानी से हिंदी में विचार-विनिमय करने योग्य अधिगम अनुभव छात्रों को प्रदान करने चाहिए। भाषा और साहित्य के अध्ययन का लक्ष्य छात्रों में संवेदनशीलता तथा मूल्यों का विकास करना भी होता है। अतः भाषा अधिगम के लिए चुनी जानेवाली रचनाएँ इस लक्ष्य की भी पूर्ति करनेवाली हो।

प्रोक्तिपरक शिक्षणशास्त्र

प्रोक्तिपरक शिक्षण भाषाई दक्षता के विकास पर बल देता है। भाषाई दक्षता का स्वाभाविक रूप से विकास नहीं होता। विचार-विनिमय की क्षमता बढ़ाना भाषार्जन का उद्‌देश्य है। विचार-विनिमय के अधिकाधिक अवसर प्रदान करने चाहिए। यह किसी

न किसी प्रोक्ति द्वारा संभव है। विचार-विनिमय की न्यूनतम इकाई है प्रोक्ति। भाषाई कौशलों का विकास (सुनना, बोलना, पढ़ना, लिखना) प्रोक्तियों द्वारा होता है। प्रोक्तिपरक शिक्षण में सृजनात्मकता का विकास भी होता है।

उच्चमाध्यमिक स्तर में अकादमीय लेखन पर अधिक महत्व देना चाहिए। किशोरवय में आशयपरक मौलिकता ज़रूर होगी। आशयों को विभिन्न प्रोक्तियों द्वारा अभिव्यक्त करते समय प्रत्येक प्रोक्ति की भाषागत तथा शैलीगत विशेषताओं पर ध्यान देना चाहिए। प्राथमिक एवं माध्यमिक स्तर से उच्च माध्यमिक स्तर पर पहुँचने पर प्रोक्तियों की स्तरीयता में विकास की ज़रूरत है। स्वरूप, आशय, भाषा आदि पर बल देते हुए स्तर का निर्धारण करना है।

इसलिए प्रत्येक प्रोक्ति के प्रोक्तिपरक व्याकरण (Discourse grammar) से छात्रों को परिचित कराना है। उच्च माध्यमिक स्तर पर शब्द की रूपगत विशेषताओं, वाक्य के विशेष प्रयोगों और संरचनाओं पर ज़ोर देना है।

संशोधन

छात्रों की उपज में मौजूद त्रुटि-सुधार वैज्ञानिक होना चाहिए। त्रुटियाँ कई प्रकार की होती हैं। अध्यापिका को तय करनी चाहिए कि अमुक अवसर पर अमुक त्रुटियों का संशोधन करना है। संशोधन के लिए अध्यापिका को कक्षा के किसी एक ग्रूप की वैयक्तिक सामग्री चुन लेनी चाहिए। ग्रूप की प्रस्तुति के समय संशोधन चाहनेवाला वाक्य/वाक्यांश श्यामपट पर लिखें। फिर प्रासंगिक प्रश्नों के सहारे या विकल्प देकर छात्रों का ध्यान त्रुटियों की ओर आकृष्ट करना चाहिए। फिर छात्रों के सहयोग से संशोधन कार्य चलाना चाहिए। आम तौर पर पाँच प्रकार की त्रुटियाँ होती हैं।

- **आशयपरक (thematic)/परिकल्पनापरक (conceptual)**
- **वाक्यरचनापरक (syntatic)**
- **रूपपरक (morphological)**
- **वर्तनी संबंधी (spelling)**

- **प्रोक्तिपरक (discourse level)**

आशयपरक संशोधन

उच्च माध्यमिक स्तर के अध्येताओं की उपज में आशयपरक मौलिकता ज़रूर होगी। फिर भी प्रोक्ति की स्तरीयता के अनुसार कुछ अवसरों पर आशयपरक संशोधन की ज़रूरत पड़ती है। टीचर वेर्शन की प्रस्तुति द्वारा अध्येता अपनी और टीचर वेर्शन की उपजों के बीच का अंतर समझ जाता है।

वाक्यरचनापरक संशोधन

- गलत शब्द विन्यास
- शब्दों का छूट जाना
- अधिक पदों/शब्दों का प्रयोग आदि

रूपपरक संशोधन

- कर्ता-क्रिया अन्विति
- पूर्वप्रत्यय का गलत प्रयोग
- परप्रत्यय का गलत प्रयोग आदि

वर्तनी संबंधी संशोधन

- इ/ई कार की गलती, घोष व्यंजनों का गलत प्रयोग आदि।

प्रेक्तिपरक संशोधन

- हर प्रोक्ति की विशेषताओं के आधार पर। उच्च माध्यमिक स्तर पर वाक्य रचनापरक, रूप परक एवं प्रेक्तिपरक संशोधन पर अधिक बल देना है।

वाचन (Reading)

वाचन, सामग्री के निचोड़न (decoding) की प्रक्रिया है। यह पाठ के केंद्रबिंदु तक पहुँचने का साधन है। वाचन से आंतरिक विश्लेषण एवं मनन की ओर पाठक अग्रसर होता है। वाचन कई प्रकार के हैं। उच्च माध्यमिक स्तर के छात्र की आयु,

ज्ञाननिर्माण की क्षमता, पाठ्यवस्तु की विशेषता आदि को ध्यान में रखकर सूचनात्मक, विश्लेषणात्मक तथा आलोचनात्मक वाचन को उच्च माध्यमिक स्तर पर महत्व दिया गया है।

सूचनात्मक वाचन (Informative Reading)

बाह्य आशय तक पहुँचने में सहायक वाचन सूचनात्मक वाचन है। यह वस्तुनिष्ठ वाचन होता है।

विश्लेषणात्मक वाचन (Analytical Reading)

पाठ के आंतरिक आशय तक पहुँचने में सहायक वाचन विश्लेषणात्मक वाचन है। इसमें पाठ्यवस्तु का विश्लेषण किया जाता है।

आलोचनात्मक वाचन (Critical Reading)

पाठ के बाह्य और आंतरिक आशय समझने के बाद प्रसंग को अपने जीवन अनुभव या समाज से अर्जित ज्ञान से जोड़कर आलोचनात्मक ढंग से जब आँका जाता है, तब आलोचनात्मक वाचन बनता है। इसमें पाठक या अध्येता का दृष्टिकोण प्रकट हो जाता है।

किशोर वय का अध्येता हमेशा जिज्ञासा से भरा रहता है। उसकी जिज्ञासा को सूचनात्मक वाचन तक से शांत न करें। विश्लेषणात्मक और आलोचनात्मक वाचन के सहारे ज्ञाननिर्माण की उसकी क्षमता का लाभ उठाना हमारा दायित्व है। इसके लिए योग्य प्रश्न उसके सामने खड़ा करना है।

निर्धारण उपगम

अध्ययन (learning) एक स्वाभाविक और निरंतर प्रक्रिया है। यह सफ़ल होने के लिए कक्षाई - अनुभव उद्देश्य पर आधारित और अधिगम उपलब्धियों पर केंद्रित होना चाहिए। हरेक पाठ से गुजरते समय अध्यापकों को ऐसी प्रक्रियाएँ तैयार करनी हैं जिससे छात्र उपलब्धियाँ अपना सके। छात्रों ने किन किन अधिगम उपलब्धियाँ अपनाई हैं? वे कहाँ तक सार्थक है? किन किन छात्रों ने अधिगम उपलब्धियाँ न अपनायी है?ऐसे छात्रों के लिए कौन-सा नया अनुभव देना है? कैसे देना है? आदि बातें आकलन से ही संभव हैं।

एक इकाई/पाठ की पूर्ति के बाद छात्रों ने क्या सीखा, यह समझने के लिए चलाई जानेवाली आकलन प्रक्रिया अध्ययन का निर्धारण है (Assessment for learning)। यहाँ अध्येता के अध्ययन के बाद की खूबियाँ व कमज़ोरियाँ निर्धारित की जाती हैं। यह निर्धारण का केवल एक स्तर है।

अध्ययन-अधिगम प्रक्रियाओं में अपने छात्र कहाँ तक पहुँच गये हैं? उन्हें कहाँ तक पहुँचाना है? इसके लिए अपने आयोजन में कौन-सा परिवर्तन लाना है? ऐसे प्रश्नों का उत्तर ढूँढना अध्ययन के लिए निर्धारण (Assessment for learning) है। अध्ययन प्रक्रिया के आयोजन और कार्यान्वन में यह आकलन महत्वपूर्ण है।

छात्र अध्ययन करता है, साथ साथ वह अपने अध्ययन का आकलन भी करता है। यह स्व-आकलन है। इससे वह अपनी खूबियों और कमजोरियों को पहचानता है। यहाँ आकलन ही अध्ययन (Assessment for learning) है।

अधिगम उपलब्धियों पर आधारित उपगमन में उसके तदनुरूप निर्धारण उपगमन अपनाना

चाहिए। (Outcome focused assessment approach). इस आकलन उपगम में छात्रों की सक्रिय भागीदारी सुनिश्चित करनी चाहिए।

सतत एवं समग्र आकलन के क्षेत्र

अधिगम उपलब्धियों पर आधारित उपगम में आकलन सतत एवं समग्र होना चाहिए। समग्र का मतलब यह है कि छात्रों के सामाजिक, भावात्मक और बौद्धिक क्षेत्र है।

सतत एवं समग्र निर्धारण क्षेत्र

- बौद्धिक क्षेत्र
- सामाजिक-संवेगात्मक क्षेत्र

बौद्धिक क्षेत्र

छात्र जिन विषयों का अध्ययन करते हैं, ये सब बौद्धिक क्षेत्र के अंतर्गत आते हैं। भाषा, विज्ञान, मानविकी एवं वाणिज्य विषय, कला, कार्यानुभव (Work Experience), स्वास्थ्य-व्यायाम शिक्षा आदि इसमें हैं। यहाँ दो प्रकार के निर्धारण निर्धारित हैं।

- सतत एवं समग्र निर्धारण (CCA)
- कार्य-कालांत मूल्यांकन (TE)

सतत एवं समग्र निर्धारण (CCA)

अधिगम उपलब्धियों पर आधारित उपगमन में निर्धारण सतत एवं समग्र होना चाहिए। समग्र का मतलब है कि छात्रों के सामाजिक, भावात्मक और बौद्धिक क्षेत्र। यहाँ तीन प्रकार के आकलन होते हैं।

- अधिगम प्रक्रिया का निर्धारण
- पोर्टफ़ोलिओ का निर्धारण
- इकाई निर्धारण

अधिगम प्रक्रिया का निर्धारण

शैक्षिक क्षमताओं को विकसित करने के लिए अलग व विभिन्न प्रकार की प्रक्रियाओं का आयोजन किया जाता है। प्रक्रिया का निर्धारण करते समय नीचे दी गई बातों पर ध्यान दें।

- प्रक्रिया में छात्रों की भागीदारी
- छात्रों का प्रदर्शन (Performance) और प्रस्तुतीकरण (Presentation)
- सृजनात्मकता
- निश्चित दक्षताएँ।

अधिगम प्रक्रिया का निर्धारण करते समय नीचे दिए सूचकों पर ध्यान दें।

- प्रक्रिया में भागीदारी (दायित्व खुद निभाने की तत्परता, दल में भागीदारी, आशयों का लेन-देन)
- आशय/धारणा
- दक्षताओं का अर्जन
- प्रदर्शन/प्रस्तुतीकरण
- अंकन

भाषाई कक्षा में दक्षता प्राप्त करने के साथ साथ प्रोक्तियों की विशेषताओं की धारणा और भाषाई कौशलों का विकास भी महत्वपूर्ण है।

पोर्टफ़ोलिओ

पोर्टफ़ोलिओ सतत निर्धारण की प्रामाणिक सामग्री है। छात्रों की आक्टिविटी लोग, पाठ्यपुस्तक की तथा अध्यापिका द्वारा दी जानेवाली वर्कशीट, सृजनात्मक गतिविधियाँ, बच्चों द्वारा तैयार किए जानेवाले प्रश्न तथा उत्तर आदि पोर्टफ़ोलिओ में आते हैं। बच्चों द्वारा अर्जित अधिगम उपलब्धियों का प्रत्यक्ष प्रमाण है पोर्टफ़ोलिओ। अध्यापिका को चाहिए कि पोर्टफोलिओ का निर्धारण निरंतर करती रहे और निर्धारण का अंकन भी करे।

पोर्टफ़ोलिओ का निर्धारण

अधिगम प्रक्रिया में छात्रों से रूपायित सभी उत्पन्न पोर्टफ़ोलिओ के अंतर्गत आते हैं। छात्रों का स्तर समझने में इसकी अहम् भूमिका है।

पोर्टफ़ोलिओ के निरीक्षण और निर्धारण से ही अभिभावक और अध्यापक छात्रों को पुनर्निवेश (Feed back) दे सकें।

पोर्टफ़ोलिओ में...

- छात्रों की आक्टिविटी लोग
- अन्य रचनाएँ, अधिगम सामग्रियाँ
- संकलन और अन्य सामग्रियाँ
- सृजनात्मक उत्पन्न
- ऐ.सी.टी उपज

इनका निर्धारण करते समय नीचे दिए गए बिंदुओं पर ध्यान दें।

- आशय-स्पष्टता
- धारणा
- समग्रता
- उचित रूप-विधान
- मौलिकता

इकाई निर्धारण (Unit Assessment)

हर इकाई के अंत में अधिगम उपलब्धियों पर आधारित सतत निर्धारण करना है। यह कार्य-कालांत मूल्यांकन के अंतर्गत नहीं आता है। इकाई निर्धारण में प्रश्नात्तरी, ऑपन बुक निर्धारण (Open Book Assessment) प्रश्नों की तैयारी, मौखिक अभिव्यक्ति, सृजनात्मक उत्पन्न की तैयारी आदि हो सकते हैं। इकाई की अमुक उपलब्धी पर छात्रों का स्तर समझने में यह सहायता देगा।

कार्य-कालांत मूल्यांकन (TE)

निश्चित समय-सीमा के अंदर पूर्वनिर्धारित अधिगम उपलब्धियाँ अपनाने में छात्र कहाँ तक सक्षम है, यह समझने के लिए कार्य-कालांत मूल्यांकन चलाया जाता है। इकाई में पूर्व - निर्धारित उपलब्धियों के आधार पर प्रोक्तियाँ, भाषाई तत्व, भाषाई क्षमता आदि

परखे जाते हैं। प्रश्नों की तैयारी में विविधता होनी है। प्रश्न पत्र तैयार करते समय विभिन्न चिंतन प्रक्रियाओं को बल देकर प्रश्नों का निर्माण करना है।

सामाजिक-संवेगात्मक क्षेत्रों का निर्धारण

बौद्धिक क्षेत्रों के समान सामाजिक भावात्मक क्षेत्रों का आकलन भी महत्वपूर्ण है। नीचे दी गयी बातें इसके अंतर्गत आती हैं।

- संप्रेषण क्षमता
- व्यक्त्यांतर निपुणता
- समानुभूति
- संवेदनाओं से तादात्म्य
- मानसिक दबाओं से तादात्म्य
- समस्या का हल करने की क्षमता
- निर्णय लेने की क्षमता
- आलोचनात्मक सोच
- सृजनात्मकता
- स्वयं पहचान - स्वत्वावबोध

इसका मूल्यांकन भी बौद्धिक क्षेत्र के विषय सिखानेवाले शिक्षक करें। विषय की प्रक्रिया के निर्धारण के साथ इसका भी निर्धारण हो।

अधिगम उपलब्धियाँ

इकाई एक

झंडा ऊँचा रहे हमारा

1.1 द्विवेदी युगीन कविता की प्रवृत्तियों पर चर्चा करके कविता की आस्वादन-टिप्पणी लिखता है।

1.2 पत्र की शैली पहचानकर विभिन्न प्रसंगों पर पत्र लिखता है।

1.3 पत्र के आशय का विश्लेषण करके विधांतरण करता है।

1.4 भाषण की शैली पहचानकर विभिन्न सामाजिक विषयों पर भाषण तैयार करता है।

1.5 भाषण का आशयग्रहण करके स्वतंत्रता का महत्व पहचानकर टिप्पणी लिखता है।

1.6 अंग्रेज़ी के छोटे-से अनुच्छेदों का हिंदी में अनुवाद करता है।

इकाई दो

निज भाषा उन्नति अहै

2.1 सफ़रनामा की शैलीगत विशेषताएँ पहचानकर आस्वादन करता है।

2.2 विभिन्न प्रसंगों का विधांतरण करता है।

2.3 सफ़रनामा के आशय का विश्लेषण करके टिप्पणी लिखता है।

2.4 मध्यकालीन भक्तकवि सूरदास के पदों की विशेषताओं पर चर्चा करके व्याख्या करता है।

2.5 सूरदास के पदों का आस्वादन करके विधांतरण करता है।

2.6 फिल्मी गीतों की विशेषताएँ पहचानकर आस्वादन करता है एवं टिप्पणी लिखता है।

2.7 हिंदी के प्रचार-प्रसार में हिंदी फिल्मी गीतों की भूमिका एवं प्रासंगिकता पहचानकर गीतों का संकलन करता है।

2.8 विज्ञान, वाणिज्य एवं मानविकी के क्षेत्र में प्रयुक्त पारिभाषिक शब्दों का प्रयोग करता है।

इकाई तीन

मान-सम्मान मिले नारी को

3.1 आत्मकथा की शैलीगत विशेषताएँ पहचानकर विभिन्न प्रसंगों का विधांतरण करता है।

3.2 हिंदीतर भाषी कविता की विशेषताएँ पहचानकर आस्वादन-टिप्पणी लिखता है।

3.3 समकालीन कहानी की अवधारणा पाकर कहानी के पात्रों के चरित्र पर टिप्पणी लिखता है।

3.4 कहानी के आशय का विश्लेषण करके विभिन्न प्रसंगों का विधांतरण करता है।

3.5 हाइकू कविता की विशेष शैली पहचानकर उसकी व्याख्या करता है।

इकाई चार

बुझा दीपक जला दो

4.1 अनूदित कविता के आशय का विश्लेषण करके आस्वादन-टिप्पणी लिखता है।

4.2 संस्मरण की शैलीगत विशेषताओं से अवगत होकर विभिन्न प्रसंगों का विधांतरण करता है।

4.3 समकालीन कविता की विशेषताएँ पहचानकर आस्वादन-टिप्पणी लिखता है।

4.4 व्यंग्य की प्रासंगिकता पहचानकर आस्वादन करता है और टिप्पणी लिखता है।

4.5 व्यंग्य के आशय का विश्लेषण करके प्रसंगों का विधांतरण करता है ।

4.5 विभिन्न सामाजिक विषयों की अवधारणा पाकर उसे 'स्किट' के रूप में प्रस्तुत करता है।

वार्षिक योजना

क्र.सं	महीना	इकाई	पाठ का नाम	समय
1	जून	1	मातृभूमि (4) बेटी के नाम पत्र (8)	12 घंटे
2	जुलाई	1,2	भारतवासियो (8) सूरीनाम में पहला दिन (4)	12 घंटे
3	अगस्त	2	सूरीनाम में पहला दिन(4) मेरे लाल (6) दोस्ती (2)	12 घंटे
4	सितंबर	2	दोस्ती (3) मंजिल की ओर (3)	6 घंटे
5	अक्तूबर	3	ज़मीन एक स्लेट का नाम है (8)	8 घंटे
6	नवंबर	3	सपने का भी हक नहीं (4) मुरकी उर्फ़ बुलाकी (8)	12 घंटे
7	दिसंबर	3	हाइकू (6)	6 घंटे
8	जनवरी	4	कुमुद फूल बेचनेवाली लड़की (5) वह भटका हुआ पीर (7)	12 घंटे
9	फरवरी	4	आदमी का चेहरा (5) दवा (5)	10 घंटे

इकाई - एक

झंडा ऊँचा रहे हमारा

पहली इकाई में देश प्रेम से ओतप्रोत तीन पाठ सम्मिलित हैं। पहला पाठ हिन्दी साहित्य के द्विवेदी युग के श्रेष्ठ कवि मैथिलीशरण गुप्त की कविता 'मातृभूमि' है जिसमें उन्होंने अपनी मातृभूमि की गरिमा का गान किया है। दूसरा पाठ अंतिम मुगल सम्राट बहादुर शाह जफ़र द्वारा अपनी बेटी के नाम लिखवाया गया खत है। ख़त में सम्राट बेटी के प्रति प्यार और अपनी दीन अवस्था जताने के साथ-साथ अंग्रेज़ों के अधीन तड़पनेवाले अपने देशवासियों के प्रति आकुलता प्रकट करते हैं। 14 अगस्त 1947 को, भारत की स्वतंत्रता की पूर्व रात्रि को पंडित जवाहरलाल नेहरू ने देशवासियों को संबोधित करते हुए एक उज्ज्वल भाषण दिया। उसका एक अंश इस इकाई का तीसरा पाठ है जिसमें नेहरूजी देशवासियों को नव भारत के निर्माण में उनकी आगे की चुनौतियों की याद दिलातें हैं। पूरी इकाई बच्चों में देश प्रेम की भावना जगाने में सक्षम है।

मातृभूमि

मूल्य एवं मनोभाव : देश की संस्कृति एवं परंपरा पर गर्व।

समय : 4 घंटे

आशय/धारणा	गतिविधियाँ एवं निर्धारण	अधिगम उपलब्धियाँ
➢ द्विवेदी युगीन कविताओं की अपनी शौलीगत एंव भाषागत विशेषताएँ हैं। ➢ द्विवेदी युगीन कविताओं में देश-प्रेम का वर्णन हैं। ➢ मैंथिलीशरण गुप्त एक देशभक्त कवि थे।	➔ प्रवेश-कार्य ➔ कविता-पाठ ➔ कविता-वाचन एवं विश्लेषण (प्रश्नों के ज़रिए चर्चा) (आपसी निर्धारण) ➔ आस्वादन-टिप्पणी-लेखन ➔ ताल-लय के साथ कविता की भावात्मक प्रस्तुति। (आपसी एंव अध्यापिका का निर्धारण)	♦ द्विवेदी युगीन कविता की प्रवृत्तियों पर चर्चा करके कविता की आस्वादन-टिप्पणी लिखता है।

बेटी के नाम

मूल्य एवं मनोभाव : स्वतंत्रता संग्राम के शहीदों के प्रति आदर एवं सम्मान।

समय : 8 घंटे

आशय / धारणा	गतिविधियाँ एवं निर्धारण	अधिगम उपलब्धियाँ
➢ मन के विचारों को अभिव्यक्त करने का सशक्त माध्यम है पत्र। ➢ पत्र लेखन की निजी शैली होती है। ➢ गुलामी सबसे बडी बुरी दशा है।	➔ प्रवेश-कार्य ➔ पत्र का वाचन (स्वनिर्धारण) ➔ विदेशी शब्दों का चयन (स्वनिर्धारण) ➔ विश्लेषणात्मक प्रश्नों के ज़रिए चर्चा। (आपसी निर्धारण) ➔ टिप्पणी-लेखन। (आपसी निर्धारण) ➔ डायरी-लेखन (अध्यापिका का निर्धारण) ➔ जवाबी पत्र-लेखन (अध्यापिका का निर्धारण) ➔ कोलाज़ की तैयारी (आपसी निर्धारण)	♦ पत्र की शैली पहचानकर विभिन्न प्रसंगों पर पत्र लिखता है। ♦ पत्र के आश्य का विश्लेषण करके विधांतरण करता है।

मेरे भारतवासियो

मूल्य एवं मनोभाव : देश के प्रति भविष्य पर गहरी सोच।

समय : 8 घंटे

आशय / धारणा	गतिविधियाँ एवं निर्धारण	अधिगम उपलब्धियाँ
➢ भाषण एक कला है। ➢ अपने मन के विचारों को सशक्त रूप से दूसरों तक पहुँचाने का सशक्त माध्यम है भाषण। ➢ आज़ादी की प्राप्ति का क्षण अनमोल है। ➢ अनुवाद में सृजनपरता है।	➔ प्रवेश-कार्य ➔ भाषण का वाचन (स्वनिर्धारण) ➔ चर्चा (आपसी निर्धारण) ➔ संक्षेपण (अध्यापिका का निर्धारण) ➔ वार्तालाप-लेखन (अध्यापिका का निर्धारण)	♦ भाषण की शैली पहचानकर विभिन्न सामाजिक विषयों पर भाषण तैयार करता है। ♦ भाषण का आशय ग्रहण करके स्वतंत्रता का महत्व पहचानकर टिप्पणी लिखता है। ♦ अग्रेज़ी के छोटे-से अनुच्छेदों का हिंदी में अनुवाद करता है।

मातृभूमि

अधिगम उपलब्धियाँ

1.1 द्विवेदी युगीन कविता की प्रवृत्तियों पर चर्चा करके कविता की आस्वादन-टिप्पणी लिखता है।

आशय/धारणा

- द्विवेदी युगीन कविताओं की अपनी शैलीगत एवं भाषागत विशेषताएँ हैं।
- द्विवेदी युगीन कविताओं में देशप्रेम का वर्णन है।
- मैथिलीशरण गुप्त द्विवेदी युगीन देशभक्त कवि हैं।
- एक नागरिक की पहचान मातृभूमि के प्रति उसका प्रेम है।

समय : 4 घंटे

सामग्री : स्वतंत्रता-संग्राम संबंधी वीडियो

गतिविधियाँ

- प्रवेश कार्य चलाएँ।
- स्वतंत्रता-संग्राम की वीडियो की प्रस्तुति।
- प्रश्नों के ज़रिए चर्चा।

जैसे :
- यह वीडियो किससे संबंधित है?
- वीडियो में कौन-कौन-से दृश्य हैं?
- क्या इसी प्रकार देशप्रेम से संबंधित घटनाएँ बता सकते हैं?

- संक्षिप्तीकरण (पन्ना संख्या 9)
- 'द्विवेदी युगीन' शीर्षक खंड (पन्ना संख्या 104) का वाचन कराएँ।

वाचन प्रक्रिया - सूचनात्मक वाचन

- छात्र कविता का वैयक्तिक वाचन करें।
- दो-एक छात्र कविता प्रस्तुत करें।

➔ अध्यापिका द्वारा कविता की प्रस्तुति।

➔ कविता के अपरिचित शब्दों का अर्थ ढूँढ़ें। (सही शब्दों के चयन पर स्वनिर्धारण)

➔ दो शब्दों के मेल से बने हुए अनेक शब्द कविता में हैं। उन्हें चुनकर लिखें।

जैसे : ✸ नीलांबर - नीले रंग का अंबर
(सही प्रस्तुति पर आपसी निर्धारण)

दो शब्दों के मेल से बने हुए शब्दों को समस्तपद कहते हैं। समस्तपद भाषा की शोभा बढ़ाती है।

➔ अध्यापिका प्रश्न पूछें।

जैसे :
- ✸ धरती का परिधान क्या है?
- ✸ नदियों और फूलों का वर्णन किस प्रकार किया है?
- ✸ कवि ने मातृभूमि का वर्णन किस प्रकार किया है?
- ✸ मातृ भूमि से कवि का बचपन कैसे जुड़ा है?

(सही प्रस्तुति पर आपसी निर्धारण)

विश्लेषणात्मक वाचन

➔ निम्नलिखित प्रश्न पूछें।

- ✸ मातृभूमि ने क्या-क्या उपकार किया?
- ✸ मातृभूमि के लिए कवि क्या करना चाहते हैं?
- ✸ "तेरा प्रत्युपकार कभी क्या हमसे होगा?"- कवि क्यों ऐसा सोचता है?

(प्रस्तुति पर अध्यापिका का निर्धारण)

जिस प्रकार माँ अपना सर्वस्व देकर बच्चों का पालन-पोषण करती है, उसीप्रकार मातृभूमि की धूलि में सरककर बच्चा बड़ा हो जाता है। वह उसी धरती पर हर्ष से खेलता-कूदता है और उसीमें सुख पाता है। माँ के समान मातृभूमि भी इसका मूल्य नहीं माँगती। ऐसी त्यागी मातृभूमि के उपकारों का मूल्य जीवन देकर भी नहीं चुकाया जाता।

- कवि की प्रोफाइल का वाचन कराएँ। (पन्ना संख्या 11)
- कविता की वीडियो/ओडियो प्रस्तुति।
- निम्नलिखित कवितांश की आस्वादन-टिप्पणी लिखें।

हम खेले-कूदे हर्षयुत, जिसकी प्यारी गोद में।
हे मातृभूमि! तुझको निरख, मग्न क्यों न हो मोद में?
पाकर तुझसे सभी सुखों को हमने भोगा ।
तेरा प्रत्युपकार कभी क्या हमसे होगा?
तेरी ही यह देह, तुझी से बनी हुई है ।
बस तेरे ही सुरस-सार से सनी हुई है।।
फिर अंत समय तू ही इसे अचल देख अपनाएगी।
हे मातृभूमि! यह अंत में तुझमें ही मिल जाएगी।।

- आस्वादन-टिप्पणी-लेखन की प्रक्रिया चलाएँ।

- कविता एवं कवि की पहचान।
- काव्यधारा की पहचान।
- कविता का आशयग्रहण एवं सार की पहचान।
- आशय का विश्लेषण ।
- काव्यधारा की मुख्य प्रवृत्तियों का चयन।
- अपने दृष्टिकोण की प्रस्तुति।

(सूचकों के आधार पर आस्वादन-टिप्पणी की निजी परख (पन्ना संख्या 12)

शेषफल

महाभारत आदिपर्व में कहा गया है कि कश्यप और कद्रु का पुत्र है शेषफल अथवा अनंत। कश्यप और कद्रु के कई पुत्र थे। सबसे बड़ा था शेषफल। उनके नीचे आते हैं वासुकी, ऐरावता, तक्षक आदि। महाभारत में ऐसा कहा गया है कि धरती पर जब-जब भगवान विष्णु का अवतार हूआ था तब भगवान के साथ शेषनाग भी अवतार लेता था। जैसे कृष्ण के साथ बलराम, राम के साथ लक्ष्मण। शेषनाग ने ब्रह्मा की तपस्या करके धरती का धारण करने का वर पा लिया था।

कविता का सारांश

'मातृभूमि' गुप्तजी की एक लोकप्रिय कविता है। कवि को मातृभूमि, भूमि का सिर्फ एक खंड नहीं अपितु सर्वेश की सगुण मूर्ति लगती है।

कवि कहते हैं – इस हरी-भरी धरती पर आकाशरूपी नीला वस्त्र सुंदर लग रहा है। मातृभूमि के मुकुट हैं सूर्य और चंद्र (दिन को मुकुट सूर्य है, रात को चंद्र)। समुद्र उसकी करधनी है, नदियाँ देशवासियों के प्रति प्रेम-प्रवाह है, फूल और तारे उनके आभूषण हैं। यहाँ के सारे पक्षीगण मातृभूमि की वंदना कर रहे हैं। शेषनाग के फन रूपी सिंहासन पर भारत माता विराजमान है। मेघ उन पर वर्षा का अभिषेक करता है। कवि मातृभूमि की इस सुंदर सगुण मूर्ति पर आत्म समर्पण करते हैं। वे कहते हैं – हे मातृभूमि! तू वस्तुतः निर्गुण सर्वेश की सगुण साकार मूर्ति है।

कवि आगे कहते हैं कि इसी मातृभूमि की धूल में लोट-लोट कर हम बड़े हुए हैं। इसी भूमि पर घुटनों के बल चलते-चलते हम पैरों पर खड़े होने लायक बने। यहीं रहकर हमने रामकृष्ण परमहंस सम परमानंद पाया। बेहोश होकर गिरने पर परमहंस को जो आध्यात्मिक अनुभूति हुई उसीके बल पर आगे वे श्रेष्ठ आध्यात्मिक आचार्य यानी हीरे कहलाए। हम उसी भूमि की गोद में खेल-कूद कर हर्ष का अनुभव करते हैं। हे मातृभूमि! तुझे देखते ही हम आनंद विभोर हो जाते हैं। तू जननी है। यहाँ हम जितना भी सुख पाते हैं सब तेरा दिया हुआ है। यह देह तेरे द्वारा दी हुई है, यह तुझसे ही बनी है, तेरे ही रस में सनी हुई है। अंत में जब हमारी मृत्यु हो जाएगी तब हम तुझमें ही मिल जाते हैं। माँ अपनी संतानों के लिए जीती है। उसके बदले में संतानें जो भी करें, जितना भी करें कम पड़ जाएगा। तभी तो कवि कहते हैं कि हे मातृभूमि! तू हमारे लिए जो करती है उसका प्रत्युपकार हमसे नहीं हो पाएगा।

इस कविता के ज़रिए अपनी मातृभूमि के प्रति कवि के गर्व और गौरव की भावनाएँ व्यक्त हुई हैं।

बेटी के नाम

अधिगम उपलब्धियाँ

1.2 पत्र की शैली पहचानकर विभिन्न प्रसंगों पर पत्र लिखता है।

1.3 पत्र के आशय का विश्लेषण करके विधांतरण करता है।

आशय/धारणा

- मन के विचारों को अभिव्यक्त करने का सशक्त माध्यम है पत्र।
- पत्र की भाषा आत्मनिष्ठ होती है।
- पत्र-लेखन की निजी शैली होती है।
- गुलामी बुरी दशा है।

समय : 8 घंटे

सहायक सामग्री : 1857 के प्रथम स्वतंत्रता-संग्राम की वीडियो।

गतिविधियाँ

- प्रवेश कार्य चलाएँ।
- वीडियो का प्रदर्शन।
- प्रश्नों के आधार पर चर्चा।
  - यह वीडियो किस प्रसंग से संबंधित है?
  - 1947 के पूर्व दो सदियों तक भारत किसके अधीन में था?
  - भारत की स्वतंत्रता की लड़ाई कब शुरू हुई?
  - वीडियो के दृश्य देखकर आपके हृदय में कौन सी भावना जाग उठती है?
- संक्षिप्तीकरण (पन्ना संख्या 14)
- 'पत्र' शीर्षक खंड (पन्ना संख्या 104) का वाचन कराएँ।

वाचन प्रक्रिया

- छात्र पत्र का वैयक्तिक रूप से वाचन करें।
- अपरिचित शब्दों का अर्थ ढूँढ़ें। (शब्दार्थों के सही चयन पर स्वनिर्धारण)

दिल्ली के अंतिम मुगल शासक थे बहादुर शाह ज़फर। अक्बर शाह द्वितीय और ललबाई का पुत्र था बहादुर शाह। उनका जन्म सन् 1175 अक्तूबर 24 में हुआ। अकबर शाह द्वितीय की मृत्यु के बाद 28 सितंबर 1838 में बहादुर शाह दिल्ली के सम्राट बन गए। अंग्रेज़ों के विरुद्ध सन् 1857 में जो पहला स्वतंत्रता संग्राम हुआ था उसका कमांडर इन चीफ़ था बहादुर शाह। सितंबर 21 को अंग्रेज़ों ने उनको पकड़ लिया। उस समय उनके पुत्र मिर्ज़ा मुगल, मिर्ज़ा खिजर सुलतान और पोता मिर्जा अबूबकर साथ थे। मेजर विल्लियम हड्सन ने उनको पकड़ा था। बहादुर शाह को उनकी पत्नी सीनत महल एवं दो पुत्रों के साथ रंगून भेजा गया। 17 दिसंबर 1862 को रंगून के कैदखाने में ही उन्होंने अंतिम साँस ली।

➔ अध्यापिका पत्र का वाचन करें।

➔ अध्यापिका प्रश्न पूछें।

- यह पत्र किसका है?
- पत्र किसके नाम पर है?
- अंग्रेज़ों के आक्रमण से दिल्लीवासियों को क्या-क्या नुकसान हुआ?
- बारात की अगवानी के सेहरे किन्होंने लिखे?
- ग़ालिब और जौक कौन थे?
- तोहफ़े के बदले बहादुर शाह ने क्या दिया?
- कैदियों का खर्च आधा कर दिया, क्यों?
- 'यह पत्र तुमको मिलेगा भी या नहीं',– बादशाह के मन में ऐसा शक क्यों उभरा होगा?

(प्रतिक्रिया पर आपसी निर्धारण)

➔ समानार्थी विदेशी शब्दों का चयन (पन्ना संख्या 17)

(चयन पर स्वनिर्धारण)

➔ अध्यापिका कहें -

पत्र में कुछ मुहावरों का प्रयोग है।

जैसे :- फाँसी पर चढ़ना।

अन्य मुहावरे पत्र से ढूँढ़कर लिखें।

➔ मुहावरों की प्रस्तुति।

(मुहावरों के चयन पर आपसी निर्धारण)

विश्लेषणात्मक वाचन

➔ अध्यापिका प्रश्न पूछें।

✸ कैदी बाप को अपनी बेटी का खत एक आँसूनामा था - क्यों?

यहाँ पिता और पुत्री के पवित्र स्नेह-संबंध की सूचना है। वे दोनों दूर-दूर थे। कैदी होने के कारण आपस में मिल नहीं सकते थे। ज़िंदा कभी मिलने की प्रतीक्षा तक नहीं थी। इस हालत में बेटी की प्यार-भरी बातों के सामने पिता के दिल में करुणा और दुख उमड़ना स्वाभाविक है।

✸ तीन दफ़ा सुनने के बाद भी दिल को क़रार नहीं आया - क्यों?

खत की दिल को छूनेवाली बातें बेटी के बचपन से जवानी तक की प्यार भरी यादें उत्पन्न करने के कारण तीन दफ़ा सुनने के बाद भी बादशाह के दिल को क़रार नहीं आया, उसे लगा होगा कि बेटी पास खड़ी है।

✸ 'दिल्लीवाले मुझको रोते होंगे। मैं भी उनको रोता हूँ।' शासक का कौन-सा गुण यहाँ प्रकट होता है?

न्यायप्रिय एवं प्रजा के हित के लिए अपने को समर्पित शासक का चित्र है।

✸ 'वे तो बिना आई मौत मर गए'- वाक्य से तात्पर्य क्या है?

वे मातृभूमि के लिए शहीद हो गए। मातृभूमि को धोखा देने पर वे बच सकते थे, पर वे देश की आज़ादी के लिए अपनी जान देने को तैयार हुए।

✸ 'अब हँसें या रोएँ, कोई फ़ायदा नहीं' - यहाँ बादशाह की कौन-सी मानसिक दशा प्रकट होती है?

जीवन से विरक्ति एवं साहसी मन का चित्र।

✸ अभी तो हम लकड़ी की भीगी हुई कब्र में ज़िंदा ही दफ़न है। जब मर जाएँगे, तब भी कब्र में ही होंगे – बादशाह ऐसा क्यों सोचते हैं?

गुलामी को बादशाह मौत मानते हैं।

➔ 'लालकिला' फिल्म का प्रदर्शन।

➔ वाक्यों के आधार पर बादशाह के चरित्र पर टिप्पणी-लेखन। (पन्ना संख्या 18)

➔ डायरी-लेखन।

➔ डायरी-लेखन की प्रक्रिया चलाएँ। (पन्ना संख्या 18)

- प्रसंग का चयन।
- प्रसंग के आधार पर अनुभवों को आत्मसात करना।
- आत्मसंघर्ष/संवेदना की पहचान।
- आत्मानुभवों की प्रस्तुति।
- संवेदना की अभिव्यक्ति।
- आत्मनिष्ठ भाषा का प्रयोग।

(निम्नलिखित सूचकों के आधार पर डायरी की परख)

- अनुभवों की सूचना है।
- आत्मसंघर्ष की अभिव्यक्ति है।
- संवेदना की अनुभूति है।
- आत्मनिष्ठ भाषा है।

डायरी की टीचर-वेर्शन

बेटी का खत... क्या वह सिर्फ एक खत है? मैं रोया, बेटा भी रोया। वह तो आँसुनामा था। मेरी बेटी, बीवी, परिवारवाले सब कितने दुखी होंगे। मेरी जनता... दिल्लीवाले... उनकी क्या दशा होगी? मैं अब भी ज़िंदा हूँ। मगर मेरे लिए... देश के लिए... कितने लोग शहीद हो गए। ए खुदा! यह गुलामी की अवस्था कितनी बुरी है। अपने देश में ही कैद में! ये अंग्रेज़ लोग इतने निर्दय क्यों बन गए? अल्लाह! इनपर क्षमा करें।

➔ 'एक नज़र' (पन्ना संख्या 19) का वाचन कराएँ।

➔ जवाबी-पत्र का लेखन। (पन्ना संख्या 18)

➔ जवाबी-पत्र की लेखन-प्रक्रिया चलाएँ।

- प्राप्त पत्र का वाचन एवं आशयग्रहण।
- खबरों की पहचान।
- मुख्य बातों का चयन।
- बातों को क्रमबद्ध करना।
- पत्र की भाषा-शैली अपनाना।
- रूपरेखा का पालन करना।
- स्वाभाविक पत्र-लेखन।

(सूचकों के आधार पर जवाबी-पत्र की निजी परख (पन्ना संख्या 19)

- कॉलाज़ की तैयारी।
- कॉलाज़ का प्रदर्शन।

विभिन्न चित्ररूपों के मेल से बनाया जानेवाला एक नया चित्ररूप है कॉलाज़। समाचारों के टुकड़े, रंगीन कागज़, चित्र आदि किसी पटल पर चिपकाकर कॉलाज़ तैयार किया जाता है। 'कॉलाज़' शब्द फ़्रेंच शब्द Coller से उत्पन्न है जिसका मतलब है 'चिपकाना'।

मेरे भारतवासियो...

अधिगम उपलब्धियाँ

1.4 भाषण की शैली पहचानकर विभिन्न सामाजिक विषयों पर भाषण तैयार करता है।

1.5 भाषण का आशय ग्रहण करके स्वतंत्रता का महत्व पहचानकर टिप्पणी लिखता है।

1.6 अंग्रेज़ी के छोटे-से अनुच्छेदों का हिंदी में अनुवाद करता है।

आशय/धारणा

- भाषण एक कला है।
- अपने मन के विचारों को दूसरों तक पहुँचाने का सशक्त माध्यम है भाषण।
- आज़ादी की प्राप्ति का क्षण अनमोल है।
- अनुवाद में सृजनपरता है।

समय : 8 घंटे

सहायक सामग्री : स्वतंत्रता दिवस की वीडियो

गतिविधियाँ

- प्रवेश कार्य चलाएँ।
- वीडियो की प्रस्तुति।
- प्रश्नों के ज़रिए चर्चा।
  - यह वीडियो किससे संबंधित है?
  - इस दिन की विशेषता क्या है?
  - वीडियो में कौन-कौन से दृश्य हैं?
- अध्यापिका का संक्षिप्तीकरण (पन्ना संख्या 22)
- 'भाषण' खंड (पन्ना संख्या 105) का वाचन कराएँ।

सूचनात्मक वाचन

- छात्रों द्वारा वैयक्तिक रूप से वाचन।
- दो-एक छात्र द्वारा भाषण की प्रस्तुति।

➔ छात्र अपरिचित शब्दों का अर्थ ढूँढ़ें।
(शब्दार्थों के सही चयन पर स्वनिर्धारण)

➔ योजकों का चयन। (वाक्यों को जोड़नेवाले शब्द)

जैसे : कि, और
(योजकों के चयन पर आपसी निर्धारण)

➔ अध्यापिका प्रश्न पूछें।

- नेहरू जी इस भाषण द्वारा किस प्रतिज्ञा की माँग करते हैं?
- भारत ने अपनी अंतहीन खोज कब से प्रारंभ की?
- भारत की सेवा से क्या तात्पर्य है?
- नेहरू जी की राय में भारत की सेवा करने का मतलब क्या है?
(प्रतिक्रियाओं के आधार पर स्वनिर्धारण)

विश्लेषणात्मक वाचन

➔ यह प्रश्न पूछें :
"आज हम दुर्भाग्य के एक युग का अंत कर रहे हैं और भारत पुनः खुद को खोज पा रहा है"।
नेहरूजी के इस कथन का तात्पर्य क्या है?

एक ज़माने में भारत का सिर ऊँचा था। संस्कृति, सभ्यता, ज्ञान एवं धन से भारत संपन्न था। परंतु विदेशियों के गुलाम हो जाने पर विभिन्न प्रकार की हमारी संपत्तियाँ नष्ट होने लगीं। नेहरू जी का तात्पर्य है कि स्वतंत्रता के उदय से भारत की महिमा एक बार फिर चमक उठेगी।

➔ भाषण की ओड़ियो/वीड़ियो की प्रस्तुति

➔ नेहरू जी का भाषण पढ़नेवाली एक छात्रा अपने मित्र से इसके बारे में बातचीत करती है। वह बातचीत तैयार करें। (पन्ना संख्या 26)

➔ बातचीत/वार्तालाप-लेखन की प्रक्रिया चलाएँ।

- प्रसंग की पहचान।
- प्रसंगानुकूल पात्रों का चयन।
- प्रसंगानुकूल बातचीत एवं भाषा-शैली का चयन।
- सही शुरुआत एवं समाप्ति का चयन।
- स्वाभाविक वार्तालाप-लेखन।

बातचीत की टीचर-वेर्शन

जुही : भारत की स्वतंत्रता-प्राप्ति की वेला में नेहरू जी का दिया भाषण तुमने पढ़ा है?
सावंत : नहीं, जुही।
जुही : वह भाषण मेरी हिंदी पुस्तक में है। हम वह पढ़कर पुलकित हो उठे।
सावंत : मैंने भी उस भाषण के बारे में बहुत सुना है।
जुही : मैं पुस्तक तुझे दूँगी।
सावंत : अच्छा, मैं वह अनोखा भाषण ज़रूर पढ़ूँगा।
जुही : वह भाषण 'यू ट्यूब' में भी है।
सावंत : ठीक है, मैं वह भी डाऊन लोड करके सुनूँगा।

➔ अनुच्छेद का संक्षेपण कराएँ। (पन्ना संख्या 26)
➔ संक्षेपण की प्रक्रिया चलाएँ।

- अनुच्छेद का आशयग्रहण।
- आशय का विश्लेषण।
- मुख्य आशयों का चयन। (प्रश्नोत्तर के आधार पर)
- आशयों की क्रमबद्धता।
- आशयों का अपनी भाषा में लेखन।
- नए परिच्छेद के लिए उचित शीर्षक का चयन।

(सूचकों के आधार पर संक्षेपण की निजी परख (पन्ना संख्या 26)

संक्षेपण की टीचर-वेर्शन

सुनहरा पल

वर्षों पहले दिया गया वचन स्वतंत्रता की इस नई सुबह से हम निभाएँगे। शोषित युग के अंत के इस पवित्र मौके पर हम देश और मानवता की सेवा के लिए समर्पित होने की प्रतिज्ञा ले रहे हैं।

➔ परिच्छेद का हिंदी में अनुवाद कराएँ। (पन्ना संख्या 26)

➔ अनुवाद की प्रक्रिया चलाएँ।

- अंग्रेज़ी अनुच्छेद का आशयग्रहण।
- अंग्रेज़ी शब्दों के समानार्थी हिंदी शब्दों का चयन।
- विशेष प्रयोगों की पहचान।
- हिंदी में आशय का भाषांतरण।
- सही संरचना का पालन।

(सूचकों के आधार पर अनुवाद की निजी परख (पन्ना संख्या 27)

अनुवाद की टीचर-वेर्शन

संभावना है, यह मेरा आखिरी भाषण हो। सरकार कल सुबह मुझे जुलूस चलाने की अनुमति दें तो भी सबरमती के पवित्र किनारे पर यह मेरा अंतिम भाषण होगा। शायद यहाँ पर यह मेरे जीवन के आखिरी शब्द होंगे। जो कुछ मुझे कहना था, वह कल तुमसे कह चुका हूँ। मैं आशा करता हूँ कि ये मेरे शब्द देश के कोने-कोने में पहुँचे।

इकाई दो

निज भाषा उन्नति अहै

पुस्तक की यह दूसरी इकाई हिंदी भाषा तथा साहित्य के महत्व, उसकी गरिमा और लोकप्रियता पर बढ़ा देती है। इकाई का पहला पाठ है 'सूरीनाम में पहला दिन'। 'सातवें विश्व हिन्दी सम्मेलन' में भाग लेने के लिए सूरीनाम गए डॉ हिमांशु जोशी वहाँ के भारतवंशियों के अपने देश और संस्कृति के प्रति लगाव का चित्रण करने के साथ-साथ हिंदी के वैश्विक स्वरूप पर भी प्रकाश डालते है। दूसरे पाठ 'मेरे लाल' में हिन्दी साहित्य के इतिहास के सुवर्ण काल कहे जानेवाले भक्तिकाल के श्रेष्ठ कवि सूरदास के दो पद संकलित हैं। सूरदास वास्तल्य रस का चित्रण करने में अग्रणी हैं। इसका सफल नमूना है पहला पद। दूसरा पद गोपियों का कृष्ण के प्रति अनन्य प्रेम दर्शानेवाला है।

हिंदी भाषा को लोकप्रिय बनाने में तथा उसके प्रचार-प्रसार को गति देने में हिंदी फ़िल्मी गीत महत्वपूर्ण भूमिका निभाती आ रही है। अतः इस इकाई के तीसरे पाठ के रूप में हिंदी की सार्वकालिक बहतरीन फिल्म 'शोले' का एक युगल गीत शामिल किया गया है। यह गीत बच्चों को दोस्ती के महत्व का पाठ पढ़ाता है। लेखन के स्तर पर व्यापक रूप से प्रयुक्त हर भाषा का अपना विशाल पारिभाषिक शब्द भंडार होता है। हिंदी भी इसका अपवाद नहीं है। पारिभाषिक शब्दावली की जानकारी नौकरी हासिल करने में भी सहायक होती है। अतः इकाई का अंतिम पाठ उच्च माध्यमिक शिक्षा के क्षेत्र में प्रयुक्त पारिभाषिक शब्दों से परिचित कराता है। पूरी इकाई हिंदी भाषा की गरिमा और गौरव को दर्शानेवाली है।

सूरीनाम में पहला दिन

मूल्य एवं मनोभाव : सफ़र के प्रति रुचि।

समय : 8 घंटे

आशय/धारणा	गतिविधियाँ एवं निर्धारण	अधिगम उपलब्धियाँ
➢ सफ़रनामा की अपनी शैलीगत विशेषताएँ है। ➢ दुनिया की प्रमुख भाषाओं में एक है हिंदी। ➢ हिंदी सार्वभौगोलिक भाषा है।	➔ प्रवेश-कार्य ➔ वाचन प्रक्रिया ➔ विशेषणों का चयन (स्वनिर्धारण) ➔ विश्लेषणात्मक प्रश्नों के ज़रिए चर्चा (आपसी निर्धारण) ➔ वार्तालाप-लेखन (अध्यापिका का निर्धारण) ➔ भाषण की प्रस्तुति (आपसी निर्धारण) ➔ पोस्टर की तैयारी (आपसी निर्धारण)	♦ सफ़रनामा की शैलीगत विशेषताएँ पहचानकर आस्वादन करता है। ♦ विभिन्न प्रसंगों का विधांतरण करता है। ♦ सफ़रनामा के आशय का विश्लेषण करके टिप्पणी लिखता है।

मेरे लाल

मूल्य एवं मनोभाव : भक्तकालीन साहित्य के प्रति रुचि।

समय : 8 घंटे

आशय / धारणा	गतिविधियाँ एवं निर्धारण	अधिगम उपलब्धियाँ
➢ सूरदास सगुण भक्तिशाखा के प्रमुख कवि है। ➢ सूरदास का वात्सल्य वर्णन एंव प्रेम का वर्णन अद्‌वितीय है।	➔ प्रवेश-कार्य ➔ पदों का वाचन (स्वनिर्धारण) ➔ शब्दों का चयन (स्वनिर्धारण) ➔ प्रश्नों के ज़रिए आशय का विश्लेषण (आपसी निर्धारण) ➔ आस्वादन-टिप्पणी-लेखन (अध्यापिका का निर्धारण) ➔ वार्तालाप लेखन (अध्यापिका का निर्धारण)	♦ सूरदास के पदों का आस्वादन करके विधांतरण करता है।

दोस्ती

मूल्य एवं मनोभाव : सच्ची मित्रता जीवन की कसौटी है।

समय : 5 घंटे

आशय / धारणा	गतिविधियाँ एवं निर्धारण	अधिगम उपलब्धियाँ
➢ फिल्मी गीतों की निजी साहित्यक विशेषताएँ होती हैं। ➢ हिंदी के प्रचार-प्रसार में फिल्मी गीतों की अहम भूमिका है।	➔ प्रवेश-कार्य ➔ शायरी की प्रस्तुति ➔ शायरी का वाचन (स्वनिर्धारण) ➔ पंक्तियों का चयन (आपसी निर्धारण) ➔ आस्वादन-टिप्पणी-लेखन (अध्यापिका का निर्धारण) ➔ फिल्म का प्रदर्शन ➔ चर्चा (आपसी निर्धारण) ➔ गीतों का संकलन (अध्यापिका का निर्धारण)	♦ फिल्मी गीतों की विशेषताएँ पहचानकर आस्वादन करता है एंव टिप्पणी लिखता है। ♦ हिंदी के प्रचार-प्रसार में हिंदी फिल्मी गीतों की भूमिका एंव प्रासंगिकता पहचानकर गीतों का संकलन करता है।

मंजिल की ओर

मूल्य एवं मनोभाव : हिंदी से संबंधित रोज़गारों के प्रति रुचि।

समय : 3 घंटे

आशय / धारणा	गतिविधियाँ एवं निर्धारण	अधिगम उपलब्धियाँ
➢ रोज़गारी के क्षेत्र में हिंदी की महत्वपूर्ण संभावनाएँ है। ➢ शिक्षा के क्षेत्र में हिंदी पारिभाषिक शब्दों का प्रयोग है। ➢ पारिभाषिक शब्दों की अवधारण रोज़गार के अधिक अवसर प्रदान करते है।	➔ प्रवेश-कार्य ➔ विज्ञापन का वाचन (स्वनिर्धारण) ➔ वार्तालाप का वाचन (स्वनिर्धारण) ➔ संविधान के भाग 17 का वाचन (स्वनिर्धारण) ➔ चर्चा (आपसी निर्धारण) ➔ परिभाषिक शब्दों का वाचन (स्वनिर्धारण) ➔ पत्र-लेखन (अध्यापिका का निर्धारण) ➔ सही मिलान (स्वनिर्धारण)	♦ विज्ञान, वाणीज्य एंव मानविकी के क्षेत्र में प्रयुक्त पारिभाषिक शब्दों का प्रयोग करता है।

सूरीनाम में पहला दिन

अधिगम उपलब्धियाँ

2.1 सफ़रनामा की शैलीगत विशेषताएँ पहचानकर आस्वादन करता है।

2.2 विभिन्न प्रसंगों का विधांतरण करता है।

2.3 सफ़रनामा के आशय का विश्लेषण करके टिप्पणी लिखता है।

आशय/धारणा

- सफ़रनामा की अपनी शैलीगत विशेषताएँ हैं।
- दुनिया की प्रमुख भाषाओं में एक है हिंदी।

समयः 8 घंटे

सहायक सामग्री : वीडियो

गतिविधियाँ

- प्रवेश कार्य चलाएँ।
- हिंदी का एवं यात्रा का महत्व दिखानेवाली वीडियो की प्रस्तुति।
- चर्चा सूचक :
  - यह वीडियो किससे संबंधित है?
  - वीडियो में हिंदी की कौन-सी खूबी दिखाई गई है?
- संक्षिप्तीकरण

हिंदी विश्व की प्रमुख भाषाओं में एक है। यह भारत की संपर्क भाषा, राजभाषा एवं राष्ट्रभाषा है। केवल भारत में ही नहीं विश्व में मॉरीशस, नेपाल, भूटान, सूरीनाम, अरब देश आदि अनेक जगहों पर बोलचाल की भाषा के रूप में हिंदी का प्रयोग होता है। हिंदी भाषा की महत्ता को ध्यान में रखकर विश्व हिंदी सम्मेलन मनाए जाते हैं। यहाँ सातवें विश्व हिंदी सम्मेलन में भाग लेने के लिए सूरीनाम पहुँचनेवाले लेखक अपनी यात्रा के अनमोल क्षणों को यहाँ सफ़रनामा के रूप में प्रस्तुत कर रहे हैं। इस सफ़रनामा का अंश पढ़ें।

➔ 'सफ़रनामा' शीर्षक खंड (पन्ना संख्या 105-106) का वाचन कराएँ।

सूचनात्मक वाचन

➔ छात्र पाठभाग का वाचन करें और अपरिचित शब्दों का अर्थ ढूँढ़ निकालें। (अध्ययन की सुविधा के लिए पाठ भाग अपनी इच्छानुसार बाँट सकते हैं।)

(शब्दार्थों के चयन पर स्वनिर्धारण)

➔ नीचे दिए गए प्रश्नों का प्रयोग प्रसंगानुसार करें।

➔ अध्यापिका प्रश्न पूछें।

जैसे :

- संसार में सबसे अधिक घने जंगल कहाँ पाए जाते हैं?
- ब्राज़ील की भूमि का कितना प्रतिशत हरियाली से आच्छादित है?
- सूरीनाम कहाँ स्थित है?
- विमान से लेखक ने क्या-क्या दृश्य देखा?
- सूरीनाम की राजभाषा कौन-सी है?
- भारतीय अप्रवासी की हिंदुस्तानी में किन-किन भाषाओं का मिश्रण हुआ है?
- हिंदी भाषा की कितनी बोलियाँ हैं?

परखें, पाठ पुस्तक का पिछला आवरण, जिसमें सत्रह बोलियों का नाम दिया गया है।

- हनुमानचालीसा किसकी रचना है ?
- रामचरितमानस की विशेषता क्या है?
- लेखक क्यों सूरीनाम पहुँचे?
- किनके आगमन की स्मृति में सूरीनाम में हिंदी महापर्व का आयोजन हो रहा है?
- सूरीनाम में भारतीय मूल के कितने प्रतिशत लोग हैं?
- 'भरतमिलाप' प्रयोग का तात्पर्य क्या है ?

चौपाई सोलह मात्रावाला प्राचीन हिंदी छंद है।

(प्रतिक्रिया पर आपसी निर्धारण)

➔ विशेषण शब्दों का चयन। (पन्ना संख्या 35)
(सही चयन पर अध्यापिका का निर्धारण)

विश्लेषणात्मक वाचन

✸ यात्रियों का कौतूहल बढ़ता चला जा रहा था। क्यों ?

किसी भी यात्री के लिए यात्रा के क्षण कौतूहल के होते हैं। अनजान जगहों के बारे में कौतूहल का बढ़ना स्वाभाविक है।

✸ 'उन्होंने तूफान के बीच दीये की तरह जलाए रखा' - इससे लेखक का क्या तात्पर्य है ?

भारतीय लोग गिरमिटिया श्रमिकों के रूप में एक सौ तीस साल पहले सूरीनाम पहुँचाए गए थे। परंतु अपने देश से बीस हज़ार किलोमीटर की लंबी यात्रा में भी वे अपनी भाषा एवं संस्कृति को नहीं भूले। अवश्य ही अपनी भाषा को बचाए रखने के लिए उन्होंने अनेक संघर्षों का सामना किया होगा। लेखक का यही तात्पर्य है।

✸ परामारिबो शहर सूरीनामी नहीं एक भारतीय शहर जैसा लग रहा है। क्यों?

सूरीनाम के सैंतीस प्रतिशत लोग भारतीय हैं। इसी कारण से सब कहीं भारतीय संस्कृति, सभ्यता एवं भाषा का प्रतिबिंब देखा जाता है। इसी कारण से लेखक को परामारिबो भारतीय शहर जैसा लगा।

➔ लेखक की प्रोफाइल (पन्ना संख्या 34) का वाचन कराएँ।

➔ बातचीत-लेखन (पन्ना संख्या 35) की प्रक्रियाएँ चलाएँ।
(अध्यापक दर्शिका पन्ना संख्या 34)
(बातचीत पर अध्यापिका का निर्धारण)
भाषण की तैयारी। (पन्ना संख्या 36)

➔ भाषण के लेखन की प्रक्रियाएँ चलाएँ।

- विषय की पहचान
- आशयों का रूपायन
- सही शुरुआत
- रूपायित आशयों की क्रमबद्धता
- तर्कसंगत प्रस्तुति
- उचित समाप्ति

(सूचकों के आधार पर भाषण की निजी परख (पन्ना संख्या 36))

भाषण की टीचर-वेर्शन

प्यारे भाइयो... बहनो...

10 जनवरी का यह दिन हर भारतवासी के लिए गौरव का दिन है। मित्रो, आज का दिन विश्व हिंदी दिवस के रूप में मनाया जा रहा है। आज हिंदी विश्व की बड़ी भाषाओं में एक बन चुकी है। सभी भूखंडों में आज हिंदी गूँजती है। विश्व शांति की आवाज़ ने इस भाषा को शांति की संवाहिका बना दी है। पूरे विश्व में भारत की महत्वपूर्ण संस्कृति की गंध आज हिंदी पहुँचा रही है। भाइयो... बहनो... आनेवाला कल हिंदी का होगा। बोलचाल में यह आसान भाषा विश्व को जीतेगी। पूरे विश्व में इसका प्रचार-प्रसार होनेवाले अच्छे दिन का इंतज़ार हम करेंगे। इसके लिए तन-तोड़ मेहनत करने की प्रतिज्ञा हम लें।

जय हिंद,जय हिंदी

➔ दो-एक छात्र द्वारा भाषण की प्रस्तुति।
(प्रस्तुति पर आपसी निर्धारण)

➔ पोस्टर की तैयारी (पन्ना संख्या 36)

➔ पोस्टर तैयार करने की प्रक्रिया चलाएँ।

- प्रसंग की पहचान
- विषय वस्तु का चयन
- विषयवस्तु के आधार पर वाक्य/वाक्यांश का चयन
- आकर्षक रूप-रेखा में प्रस्तुति

➔ सूचकों के आधार पर पोस्टर की निजी परख (पन्ना संख्या 38)।

➔ पोस्टरों का प्रदर्शन।

➔ हिमांशु जोशी का यह वाक्य बोर्ड पर लिखें।

'लगभग बीस हज़ार किलोमीटर की लंबी यात्रा के पश्चात एक प्रकार के सुकून का अहसास'

➔ अध्यापिका कहें - यात्रा अनुभओं का खज़ाना होती है। आपने भी कई यात्राएँ की होंगी।

अपनी किसी यात्रा का अनमोल अनुभव प्रस्तुत करें।

(प्रस्तुति पर आपसी निर्धारण)

विशेष ध्यान दें :

जनसंख्या की गणना में भारत का स्थान विश्व में दूसरा है। इस विशाल देश में बोली जानेवाली विभिन्न भाषाओं में सबसे विशाल एवं सबसे मुख्य भाषा है हिंदी। उत्तर भारत की करीब सभी जगहों पर हिंदी बोली जाती है और दक्षिण की प्रायः समस्त प्रांतों पर हिंदी समझी जाती है। आज यह भाषा भारत की भौगोलिक सीमाओं को लाँघकर विश्व के सभी भूभागों की ओर फैलती जा रही है। इसका सबूत है कि विश्व के करीब 60 प्रतिशत देशों में हिंदी का बोलबाला है। जहाँ जहाँ भारतवासी रहते हैं, वहाँ हिंदी अपनी उपस्थिति जताती जा रही है। विश्व के 150 से ज़्यादा तथा विश्व विद्यालयों में हिंदी पाठ्यक्रम का विषय बन चुका है। इस वैश्वीकृत जगत में विश्व को संबोधित करने को हिंदी तैयार हो रही है।

मेरे लाल...

अधिगम उपलब्धियाँ

2.4 मध्यकालीन भक्तकवि सूरदास के पदों की विशेषताओं पर चर्चा करके व्याख्या करता है।

2.5 सूरदास के पदों का आस्वादन करके विधांतरण करता है।

आशय/धारणा

- सूरदास सगुण भक्तिशाखा के प्रमुख कवि हैं।
- सूरदास का वात्सल्य वर्णन एवं प्रेम वर्णन अद्‌वितीय है।

समय : 8 घंटे

सामग्री : लोरी की वीडियो/ओडियो की प्रस्तुति

गतिविधियाँ

- प्रवेश कार्य
- अध्यापिका प्रश्न पूछें।

जैसेः
- आपको यह गीत कैसा लगा?
- यह किस प्रकार का गीत है?
- इस गीत में कौन-सा भाव है?
- लोरी गीत की विशेषता क्या है?

- संक्षिप्तीकरण

लोरी गीत बच्चे-बूढ़े सब पसंद करते हैं क्योंकि वात्सल्य इसका प्रमुख भाव होता है। वात्सल्य भरा गीत प्राचीन काल से सभी भाषाओं में विद्‌यमान है। वात्सल्य रस के सम्राट के रूप में सूरदास का स्थान महत्वपूर्ण है। वे हिंदी साहित्य के भक्तिकाल के सगुण भक्त कवि हैं। उनका यह वात्सल्य भरा पद पढ़ें।

- ‘भक्तिकालीन पद’ शीर्षक खंड (पन्ना संख्या 106) का वाचन कराएँ।
- ‘मेरे लाल’ पद का वैयक्तिक वाचन।
- दो-एक छात्र की प्रस्तुति।
- अध्यापिका की प्रस्तुति।
- अपरिचित शब्दों का अर्थ ढूँढ़ निकालें।
- समानार्थी पंक्ति ढूँढ़ निकालें।

- पुत्र का मुख देखकर यशोदा खुश हुई।
- यशोदा पुत्र के दुधिए दाँतों को देखकर खुश हुई।
- यशोदा अपने आपको भूल गई।
- पत्नी की बातें सुनकर पति खुशी से अंदर आए।
- दाँत ऐसा लगता था मानो कमल पुष्प पर बिजली जम गई हो।

(पंक्तियों के चयन पर आपसी निर्धारण)

- मेरे लाल पद की ओडियो/वीडियो प्रस्तुत करें।
- प्रणय भरा एक फ़िल्मी गीत की ओडियो/वीडियो प्रस्तुत करें।
  - यह गीत आपको कैसा लगा?
  - इसमें कौन-सा भाव प्रस्तुत है?
- संक्षिप्तीकरण

प्रणय एक उदात्त भाव है। संसार की सभी भाषाओं में सबसे महत्वपूर्ण रचनाएँ प्रणय पर आधारित है। कवि सूरदास ने भी प्रणय भाव का उदात्त चित्रण किया था। यहाँ कृष्ण का मुरलीगीत सुननेवाली गोपिकाओं के पवित्र प्रणय का चित्रण पढ़ें।

➔ छात्रों द्वारा 'हे कान्ह' पद का वैयक्तिक वाचन।

➔ दो-एक छात्र द्वारा पद की प्रस्तुति।
(प्रस्तुति पर आपसी निर्धारण)

➔ अध्यापिका की प्रस्तुति।

विशेष ध्यान दें...

'हे कान्ह' पद की पहली पंक्ति इस प्रकार है।
जबहीं बन मुरली स्रवन परी।

➔ छात्र अपरिचित शब्दों का अर्थ ढूँढ़ निकालें।
(अर्थों के सही चयन पर आपसी निर्धारण)

➔ समान आशयवाली पंक्ति ढूँढ़ निकालें।

- गोपिकाएँ चकित हुईं और सब कामकाज भूल गईं।
- कुल की मर्यादा तथा धर्मग्रंथों के अनुशासन से वे नहीं डरीं।
- चतुर कृष्ण नए-नए तरीकों से गोपिकाओं के मन को हर लेता है।

(सही चयन पर स्वनिर्धारण)

➔ 'हे कान्ह' पद की वीडियो/ओडियो की प्रस्तुति।
सूरदास की प्रोफाइल (पन्ना संख्या 41) का वाचन कराएँ।

➔ समानार्थी शब्दों का चयन (पन्ना संख्या 42)

(सही चयन पर स्वनिर्धारण)

➔ अध्यापिका निम्नलिखित प्रश्न पूछें।

- यशोदा माँ अपने आपको भूल गई। कब और क्यों?
- 'मनो कमल पर बीजु जमाई '- का तात्पर्य क्या है?
- गोपिकाएँ कब अपने को भूलकर दौड़ीं?

➔ छात्र उत्तर प्रस्तुत करें और पुस्तिका में लिखें।

(सही प्रस्तुति पर आपसी निर्धारण)

➔ 'मेरे लाल' पद की आस्वादन-टिप्पणी का लेखन।

➔ 'हे कान्ह' पद की आस्वादन-टिप्पणी का लेखन।

- आस्वादन-टिप्पणी लेखन की प्रक्रिया चलाएँ।
  (अध्यापक दर्शिका पन्ना संख्या 24)
  (आस्वादन-टिप्पणी पर अध्यापिका का निर्धारण)
- बातचीत-लेखन। (पन्ना संख्या 42)
- वार्तालाप-लेखन की प्रक्रिया चलाएँ।
  (अध्यापक दर्शिका पन्ना संख्या 34)
- सूचकों के आधार पर बातचीत की निजी परख।

बातचीत की टीचर-वेर्शन

पहली गोपिका : री... सुन रही है न, कान्हा की मुरली?
दूसरी गोपिका : हाँ... हाँ... कितनी सुरीली है मुरली की आवाज़... कान्हा की तरह!
पहली गोपिका : कान्हा के पास पहुँचने को मेरा दिल धड़क रहा है।
दूसरी गोपिका : मेरा भी... जाएँ, कालिंदी की ओर...
पहली गोपिका : घरवाले कुछ कहेंगे क्या?
दूसरी गोपिका : कहेंगे वे ज़रूर। फिर भी हम जाएँगी।
पहली गोपिका : हाँ... मुझे अभी कान्हा से मिलना है। मैं भी किसीकी परवाह नहीं करती।
दूसरी गोपिका : कान्हा का अनुराग ही सबसे बढ़कर है।

दोस्ती

अधिगम उपलब्धियाँ

2.6 फ़िल्मी गीतों की विशेषताएँ पहचानकर आस्वादन करता है एवं टिप्पणी लिखता है।

2.7 हिंदी के प्रचार-प्रसार में हिंदी फिल्मी गीतों की भूमिका एवं प्रासंगिकता पहचानकर गीतों का संकलन करता है।

आशय/धारणा

- फ़िल्मी गीतों की निजी साहित्यिक विशेषताएँ होती हैं।
- हिंदी के प्रचार-प्रसार में हिंदी फ़िल्मी गीतों की अहम भूमिका है।

समय : 5 घंटे

सहायक सामग्री : हिंदी फ़िल्मी गीतों की ओडियो/वीडियो

गतिविधियाँ

- प्रवेश कार्य
- ओडियो की प्रस्तुति (कभी-कभी मेरे दिल में...)
- वीडियो की प्रस्तुति (अन्य फिल्मी गीतों की)
- अध्यापिका प्रश्न पूछें।
  - फ़िल्मी गीत कैसा लगा?
  - फ़िल्मी गीत आपको पसंद है न?
  - हिंदी भाषा को लोकप्रिय बनाने में फ़िल्मी गीत कहाँ तक उपयोगी रहे हैं?
- संक्षिप्तीकरण (पन्ना संख्या 45)
- 'फ़िल्मी गीत ' शीर्षक खंड (पन्ना संख्या 107) का वाचन कराएँ।
- दोस्ती गीत की ओडियो की प्रस्तुति।
- वैयक्तिक रूप से गीत का वाचन। (छात्रों द्वारा)
- दो-एक छात्र द्वारा प्रस्तुति।

- अपरिचित शब्दों का अर्थ ढूँढ़ लें।
- समानार्थी शब्दों का चयन। (पन्ना संख्या 49)
- गीत के आशय पर चर्चा।
- दोस्ती गीत की वीडियो की प्रस्तुति।
- मनपसंद पंक्ति का चयन। (पन्ना संख्या 49)
- आनंद बख्शी, आर. डी. बर्मन, किशोर कुमार एवं मन्ना डे की प्रोफाइल का वाचन कराएँ।
- शोले फ़िल्म का प्रदर्शन।
- गीत के औचित्य पर चर्चा (पन्ना संख्या 49)
- चर्चा सूचक :
  - फ़िल्म में गीत की प्रासंगिकता
  - गीत की कोरियोग्राफ़ी
  - गीत का संगीत
- फिल्मी गीत की आस्वादन-टिप्पणी का लेखन

आस्वादन-टिप्पणी की टीचर वेर्शन

शोले फ़िल्म का मशहूर गीत है दोस्ती। इसका रचनाकार आनंद बख़्शी है। संगीतकार आर.डी.बर्मन और पार्श्वगायक किशोर कुमार एवं मन्ना डे हैं। इसकी पंक्तियाँ सार्थक एवं आकर्षक हैं। दोस्ती के महत्व का वर्णन इसमें किया गया है। गीत में कहता है, मृत्यु के सामने भी दोस्ती की विजय होती है। दोस्तों का दुख, जय-पराजय सब एक ही है। दोस्ती में एक दूसरे के लिए मर जाने या दुश्मनी मोल लेने को भी दोस्त तैयार हो जाते हैं। दोस्त दिखने में दो हैं। मगर दिल से एक ही है।

फ़िल्मी गीत में जो खूबियाँ होनी चाहिए, वे सब इसमें हैं। गीत के माधुर्य के कारण संगीतकार एवं पार्श्वगायक भी अपनी प्रतिभा का सफलतापूर्वक प्रदर्शन कर सके हैं।

- इंटरनेट की सहायता से फ़िल्मी गीतों का संकलन। (पन्ना संख्या 49)

मंज़िल की ओर...

अधिगम उपलब्धियाँ

2.8 विज्ञान, वाणिज्य एवं मानविकी के क्षेत्र में प्रयुक्त पारिभाषिक शब्दों का प्रयोग करता है।

आशय/धारणा

- रोज़गारी के क्षेत्र में हिंदी की महत्वपूर्ण संभावनाएँ हैं।
- शिक्षा के सभी क्षेत्रों में हिंदी के पारिभाषिक शब्दों का प्रयोग होता है।
- पारिभाषिक शब्दों की अवधारणा रोज़गार के अधिक अवसर प्रदान करते हैं।

समय : 3 घंटे

सहायक सामग्री : वीडियो

गतिविधियाँ

- प्रवेशकार्य
- राजभाषा, रोज़गार, नौकरी संबंधी सुर्खियों आदि से संबंधित वीडियो क्लिप्पिंग की प्रस्तुति।
- प्रश्नों के ज़रिए चर्चा।
  - यह वीडियो किससे संबंधित है?
  - सुर्खियाँ किससे संबंधित हैं?
  - दृश्यों के आधार पर कहें हिंदी सीखने से किसकी संभावना दीख पड़ती है?
- संक्षिप्तीकरण

हिंदी भारत की राजभाषा है। हिंदी सीखने से रोज़गार के क्षेत्र में बहुत-से अवसर मिलते हैं।

- 'पारिभाषिक शब्द' शीर्षक खंड (पन्ना संख्या 107-108) का वाचन कराएँ।

- ➔ भारतीय रिज़र्व बैंक के विज्ञापन (पन्ना संख्या 50) का वाचन।
- ➔ विज्ञापन के अपरिचित शब्दों का अर्थ ढूँढ़ निकालें।
- ➔ आपसी चर्चा एवं अध्यापक की मदद द्वारा विज्ञापन का आशय-स्पष्टीकरण।
- ➔ वार्तालाप (पन्ना संख्या 51) का वैयक्तिक वाचन।
- ➔ किन्हीं दो छात्रों द्वारा वार्तालाप की प्रस्तुति।
- ➔ गज़ट के अंश (पन्ना संख्या 51) का वैयक्तिक वाचन।
- ➔ संक्षिप्तीकरण (पन्ना संख्या 52)
- ➔ पारिभाषिक शब्दों का वाचन।

> पारिभाषिक शब्दों के अध्ययन की सुविधा के लिए संकेत-पट, श्याम-पट, पी.पी.टी. आदि का लाभ उठा सकते हैं।

- ➔ डायरी के आधार पर वीणा का पत्र-लेखन (पन्ना संख्या 54)
- ➔ पत्र-लेखन की प्रक्रिया चलाएँ।

- ♦ डायरी का वाचन।
- ♦ डायरी का आशयग्रहण।
- ♦ वीणा की खुशी की पहचान।
- ♦ खुशख़बरी को पत्र की भाषा में प्रस्तुति।
- ♦ पत्र की रूप-रेखा का पालन।

पत्र की टीचर-वेर्शन

मान्य श्रीवास्तव जी,

नमस्ते। कैसे हैं आप? मैं वीणा हूँ। आपको याद है न? मैं आपसे मिलने आया था, राजभाषा अधिकारी के पद के उम्मीदवार के रूप में। आपने मुझे भारतीय संविधान एवं पारिभाषिक शब्दावली की पुस्तक दी थी। आपसे यह ख़बर बड़ी खुशी से बता रही हूँ कि मुझे राजभाषा अधिकारी के पद पर नियुक्ति मिली है। नियुक्ति हैदराबाद शाखा में है। आपसे मुझे जो मदद मिली है, वह कभी भूल नहीं सकती। नौकरी में प्रवेश करने के पहले मैं आपका आशीर्वाद चाहती हूँ। अगले हफ़्ते अपने माँ-बाप के साथ आपके घर आऊँगी। एक बार फिर मैं अपनी शुक्रिया अदा कर रही हूँ।

20/10/2015 *आपकी छात्रा*

हैदराबाद *वीणा*

➔ सही मिलान करें। (पन्ना संख्या 54)

भारतीय संविधान में हिंदी को राजभाषा की मान्यता प्राप्त है। अतः देश के भीतर और बाहर हिंदी का प्रचार-प्रसार सरकार की नीति है। इसी कारण से देश भर में राजभाषा अधिकारी से लेकर हिंदी अफ़सर, अनुवादक, प्राध्यापक, आशुलिपिक, टंकक तथा शिक्षण के क्षेत्र में विश्वविद्यालय से लेकर स्कूलों तक हिंदी अध्यापकों के लाखों पद हैं। हिंदी पढ़नेवाले छात्रों को ऐसे पदों पर नौकरी (रोज़गारी) का मौका मिलता है। द्वितीय भाषा के रूप में उच्च माध्यमिक स्तर पर हिंदी पढ़नेवाले छात्रों को स्नातक (BA) और परास्नातक (MA) स्तर पर ऐच्छिक विषय के रूप में हिंदी सीखने का मौका मिलता है। इसके साथ ही टंकण, आशुलिपि, अनुवाद तथा पत्रकारिता में उपाधियाँ प्राप्त करने का भी अवसर है। इस प्रकार उच्च पदों पर पहुँचकर हिंदी की और देश की सेवा करने का सुनहरा वातावरण खुल जाता है।

इकाई तीन

मान सम्मान मिले नारी को

इस इकाई के चार पाठों में से दो, नारी की समस्याओं से जुड़े है। पहला पाठ एकांत श्रीवास्तव की आत्मकथात्मक रचना का एक अंश है जिसमें बेटी की विदाई को सुगम बनाने के लिए अपनी ज़मीन को बेचने वाले पिताजी की विवशता दर्ज है। अगला पाठ हिंदीतर प्रदेश के डॉ बाबू द्वारा रचित हिंदी कविता है - 'सपने का भी हक नहीं'। कवि ने इस कविता के ज़रिए सुहावने सपने देखने से भी वंचित एक गरीब मज़दूरिन की व्यथा को वाणी दी है। इकाई का तीसरा पाठ अमृता प्रीतम की कहानी 'मुरकी उर्फ़ बुलाकी' है जिसमें दैहिक और मानसिक शोषण के आगे हार न माननेवाली नारी के संघर्षशील जीवन का चित्रण है। यह कहानी नारी समाज के लिए प्रेरणादायक है। इकाई का चौथा व अंतिम पाठ जापानी कविता शैली हाइकू में रचित मर्मपर्शे तीन-तीन पंक्तियोंवाली 6 कविताएँ हैं।

ज़मीन एक स्लेट का नाम है

मूल्य एवं मनोभाव : दहेज-प्रथा जैसे अनाचारों के प्रति आवाज़ उठानी है।

समय : 8 घंटे

आशय/धारणा	गतिविधियाँ एवं निर्धारण	अधिगम उपलब्धियाँ
➢ आत्मकथा की विशेष शैली है। ➢ आत्मकथा में स्वानुभूति की अभिव्यक्ति होती है।	➔ प्रवेश-कार्य ➔ वाचन प्रक्रिया (स्वनिर्धारण) ➔ वाक्यांशों का वाचन (स्वनिर्धारण) ➔ विश्लेषणात्मक प्रश्नों के ज़रिए चर्चा (आपसी निर्धारण) ➔ कविता पर चर्चा एवं टिप्पणी-लेखन (अध्यापिका का निर्धारण) ➔ डायरी-लेखन (आपसी निर्धारण) ➔ परिचर्चा एवं आलेख की तैयारी (अध्यापिका का निर्धारण) ➔ टिप्पणी-लेखन (अध्यापिका का निर्धारण)	♦ आत्मकथा की शैलीगत विशेषताएँ पहचानकर विभिन्न प्रसंगों का विधांतरण करता है।

सपने का भी हक नहीं

मूल्य एवं मनोभाव : समाज के गरीबों के प्रति हमदर्दी का भाव।

समय : 4 घंटे

आशय/धारणा	गतिविधियाँ एवं निर्धारण	अधिगम उपलब्धियाँ
➢ हिंदीतर प्रदेश में भी हिंदी साहित्य संपन्न है। ➢ मामूली लोगों की जिन्दगी की चित्रण कविता द्वारा संभव है।	➔ प्रवेश-कार्य ➔ कविता का वाचन एवं विश्लेषण (प्रश्नों के ज़रिए चर्चा) (आपसी निर्धारण) ➔ आस्वादन-टिप्पणी-लेखन (अध्यापिका का निर्धारण) ➔ कविता - पाठ ➔ हिंदीतर प्रदेशों की हिंदी कविताओं का संकत्तन एवं कवियों के प्रोफैल की तैयारी।	♦ हिंदीतर भाषी कवि की कविता की विशेषताएँ पहचानकर आस्वादन टिप्पणी लिखता है।

मुरकी उर्फ़ बुलाकी

मूल्य एवं मनोभाव : नारी-शोषण के विरुद्ध आवाज़ उठानी है।

समय : 8 घंटे

आशय/धारणा	गतिविधियाँ एवं निर्धारण	अधिगम उपलब्धियाँ
➢ समकालीन कहानियों की अपनी विशेष शैली है। ➢ कहानी के आशय का विधांतरण संभव है। ➢ समाज में नारी-शोषण है।	➔ प्रवेश-कार्य ➔ वाचन प्रक्रिया (स्वनिर्धारण) ➔ सही मिलान (आपसी निर्धारण) ➔ चरित्र पर टिप्पणी - लेखन (आपसी/अध्यापिका का निर्धारण) ➔ वार्तालाप-लेखन (अध्यापिका का निर्धारण) ➔ आत्मकथांश का लेखन (अध्यापिका का निर्धारण) ➔ ज्ञानपीठ पुरस्कृत हिंदी रचनाकारों की प्रोफाइल की तैयारी।	♦ समकालीन कहानी की अवधारण पाकर कहानी के पात्रों के चरित्र पर टिप्पणी लिखता है। ♦ कहानी के आशय का विश्लेषण करके विभिन्न प्रसंगों का विधांतरण करता है।

हाइकू

मूल्य एवं मनोभाव : छोटे हो या बड़ा, कर्म ही मुख्य है।

समय : 3 घंटे

आशय / धारणा	गतिविधियाँ एवं निर्धारण	अधिगम उपलब्धियाँ
➢ हाइकू मूल रूप से जापानी कविता-रूप है। ➢ गागर में सागर भरने की क्षमता हाइकू में है।	➔ प्रवेश-कार्य ➔ हाइकू के मूल-भाव पर चर्चा। (आपसी निर्धारण) ➔ प्रत्येक हाइकू की आस्वादन-टिपणी लेखन। (अध्यापिका का निर्धारण) ➔ छात्रों द्वारा हाइकू का सृजन। (आपसी/अध्यापिका का निर्धारण) ➔ हाइकू का संकलन।	♦ हाइकू कविता की विशेष शैली पहचानकर उसकी व्याख्या करता है।

ज़मीन एक स्लेट का नाम है।

अधिगम उपलब्धियाँ

3.1 आत्मकथा की शैलीगत विशेषताएँ पहचानकर विभिन्न प्रयोगों का विधांतरण करता है।

आशय/धारणा

- आत्मकथा की विशेष शैली है।
- आत्मकथा में स्वानुभूति की अभिव्यक्ति होती है।

समय : 8 घंटे

सामग्री : महान व्यक्तियों की आत्मकथा संबंधित वीडियो क्लिप्पिंग।

➔ अध्यापिका प्रश्न पूछें।

- ✸ वीडियो में क्या-क्या दृश्य हैं?
- ✸ वीडियो में किन-किन महान व्यक्तियों का दृश्य है?
- ✸ उनकी आत्मकथाओं के नाम क्या-क्या हैं?
- ✸ अपने मनपसंद महान व्यक्ति की आत्मकथा का नाम बताएँ।

➔ संक्षिप्तीकरण (पन्ना संख्या 57)

➔ 'आत्मकथा' शीर्षक खंड (पन्ना संख्या 108) का वाचन कराएँ।

सूचनात्मक वाचन -

➔ आत्मकथा का वैयक्तिक रूप से वाचन।

➔ अपरिचित शब्दों का अर्थ ढूँढ़ लें और प्रस्तुत करें।

➔ अध्यापिका प्रश्न पूछें।

- ✸ लेखक को किसकी गारंडी नहीं थी?
- ✸ शादी के लिए क्या-क्या तैयारियाँ की गईं?
- ✸ ज़मीन की रजिस्ट्री के एक दिन पहले पिताजी ने कहाँ जाने को कहा?
- ✸ पिताजी के देखे बिना लेखक ने क्या किया?

विश्लेषणात्मक वाचन

➔ अध्यापिका प्रश्न पूछें।

✸ रजिस्ट्री के पहले पिताजी को खेत देखने की इच्छा हुई। क्यों?

अपनी मिट्टी पर सभी का लगाव होता है। रजिस्ट्री हो जाने पर ज़मीन दूसरे की हो जाती। आज वह पिताजी का है। अतः पिताजी को आज ही ज़मीन देखने की इच्छा हुई।

✸ पिताजी का वाक्य लेखक को आहत कर गया। क्यों?

पिताजी का वाक्य सुननेवाले लेखक को उसके मन की असहनीय पीड़ा समझ में आई जो प्यारी ज़मीन बेचने से उत्पन्न हुई थी।

✸ लेखक को अपनी ज़मीन स्लेट भी लगता है और फूल भी। क्यों ?

हर व्यक्ति का बचपन अपनी मिट्टी से जुड़ा हुआ होता है। प्रकृति से उसका पहला पाठ वहीं से सीखा जाता है। वहीं से उसका जीवन खिलने लगता है। इसलिए लेखक को अपनी ज़मीन स्लेट भी लगता है और फूल भी।

➔ पिताजी की गहरी आस्था को सूचित करनेवाले वाक्य या वाक्यांशों का चयन (पन्ना संख्या 61)

(चयन पर स्वनिर्धारण)

➔ कविता का वैयक्तिक रूप से वाचन।

➔ दो-एक छात्र द्वारा कविता की प्रस्तुति।

➔ अध्यापिका द्वारा कविता की प्रस्तुति।

➔ छात्र अपरिचित शब्दों का अर्थ ढूँढ़ लें।

(सही शब्दार्थ पर स्वनिर्धारण)

➔ कविता के आशय पर चर्चा।

➔ एकांत श्रीवास्तव की प्रोफाइल (पन्ना संख्या 61) का वाचन कराएँ।

सहायक सामग्री : एक नज़र - पन्ना संख्या 63

➔ अध्यापिका पूछें - ज़मीन की तुलना हृदय से क्यों की गई है?
(सही प्रस्तुति पर अध्यापिका का निर्धारण)

➔ शीर्षक का चयन (पन्ना संख्या 61)

➔ छात्र द्वारा शीर्षक की प्रस्तुति।
(शीर्षक पर आपसी निर्धारण)

➔ दीदी का डायरी लेखन (पन्ना संख्या 62)

➔ डायरी लेखन की प्रक्रिया चलाएँ। (टीचर टेक्स्ट पन्ना संख्या ....)

➔ सूचकों के आधार पर डायरी की निजी परख।

- अनुभवों की सूचना है।
- आत्मसंघर्ष की अभिव्यक्ति है।
- संवेदना की अनुभूति है।
- आत्मनिष्ठ भाषा है।

➔ परिचर्चा चलाएँ।

➔ परिचर्चा की प्रक्रियाएँ।

➔ आडंबरपूर्ण शादी से संबंधित किसी वीडियो/चित्र/समाचार की प्रस्तुति।

➔ उसपर चर्चा।

जैसे :
- इसमें किसका चित्रण है?
- क्या हमारे समाज में सभी यह रीति अपना सकते हैं?
- इसका अनुकरण करने की ज़रूरत है या नहीं?
- इसके अनुकरण से कौन-कौन सी आपत्तियाँ हैं?

➔ छात्रों की प्रतिक्रिया

➔ परिचर्चा के विषय की प्रस्तुति (पन्ना संख्या 62)

➔ विषय पर छात्र की वैयक्तिक प्रस्तुति।

- ➔ मुख्य मुद्दे बोर्ड पर सूचीबद्ध करें।
- ➔ छात्रों को ग्रूपों में बाँटें और हर एक मुद्दा हर एक ग्रूप को दें।
- ➔ प्रत्येक ग्रूप अपने मुद्दे पर चर्चा करें और प्रस्तुत करें।
- ➔ दूसरे ग्रूप अपना मत जोड़ें व तोड़ें।
- ➔ सभी छात्र वैयक्तिक रूप से विषय पर आलेख तैयार करें।
- ➔ टिप्पणी लेखन (पन्ना संख्या 63)
- ➔ टिप्पणी-लेखन की प्रक्रिया चलाएँ।

- ♦ आत्मकथा के बिदाई प्रसंग का विश्लेषण।
- ♦ पिता के दुख की पहचान।
- ♦ पिता और बच्चों के बीच के अनमोल रिश्ते की पहचान।
- ♦ रिश्ते के महत्व पर टिप्पणी लेखन।

- ➔ सूचकों के (पन्ना संख्या 53) आधार पर टिप्पणी का निजी परख।

'मेरे दिन मेरे वर्ष' एकांत श्रीवास्तव की हदयस्पर्शी आत्मरचना है। इसके पाँचवें अध्याय का अंश है प्रस्तुत भाग।

केंद्रीय विद्यालय की तदर्थ सेवा के बाद लेखक और पूरा परिवार दीदी की शादी के वास्ते गाँव पहुँचा है। शादी का खर्च निभाने के लिए उस परिवार को अपनी ज़मीन बेचना पड़ता है। पाई-पाई इकट्ठा करके खरीदा हुआ ज़मीन बेचने पर पिताजी बहुत बेचैन हो जाते हैं। वे उसे कभी बेचना नहीं चाहते थे। उनके मन का हाहाकार लेखक समझ रहे थे। उनके लिए वह सिर्फ मिट्टी ही नहीं बल्कि अपने बचपन की यादों से कविता रचता स्लेट जैसा, अपने रक्त के रंग से चमका हुआ फूल जैसा है।

मिट्टी और बेटी की बिदाई से आहें भरनेवाले पिताजी के अंतर्द्वंद्व को देखकर लेखक अंत में अपने आप से यह प्रश्न उठाते हैं कि पिताजी के सूखे आँसुओं को, उसके निश्शब्द विलाप को कोई देख और सुन सकता है?

क्योंकि वे जानते थे कि धन होने पर भी ज़मीन नहीं है तो गाँव में इज्ज़त-प्रतिष्ठा नहीं होगी।

सपने का भी हक नहीं

अधिगम उपलब्धियाँ

3.2 हिंदीतर भाषी कविता की विशेषताएँ पहचानकर आस्वादन-टिप्पणी लिखता है।

आशय/धारणा

- हिंदीतर प्रदेश में भी हिंदी साहित्य संपन्न है।
- मामूली लोगों की ज़िंदगी का चित्रण कविता द्वारा संभव है।

समय : 4 घंटे

सहायक सामग्री : वीडियो

गतिविधियाँ

- प्रवेशकार्य चलाएँ।
- वीडियो का प्रदर्शन।
- चर्चा चलाएँ।

जैसे :
- वीडियो में आपने क्या-क्या दृश्य देखे हैं?
- क्या आप सपने देखा करते हैं?
- सपनों के बारे में आपकी राय क्या है?

- संक्षिप्तीकरण

> सभी लोग सपने देखते हैं। सपने कभी जीने की आशा देते हैं, कभी निराशा। सपने की कोई भाषा नहीं होती, जाति नहीं होती, धनी-निर्धन का भेदभाव नहीं होता। सपने पर केरल के कवि डॉ जे बाबू की लिखी हुई एक कविता पढ़ें।

- 'हिंदीतर प्रदेश का हिंदी साहित्य' शीर्षक खंड (पन्ना संख्या 108-109) का वाचन कराएँ।

सूचनात्मक वाचन

- छात्र कविता का वैयक्तिक वाचन करें।

➔ दो-एक छात्र कविता प्रस्तुत करें।

➔ अध्यापिका द्‌वारा कविता की प्रस्तुति।

➔ अपरिचित शब्दों का अर्थ ढूँढ़ लें।
(शब्दार्थ के चयन पर स्वनिर्धारण)

➔ अध्यापिका प्रश्न पूछें।

जैसे :
- ✸ सपना देखनेवाली कहाँ रहती है?
- ✸ सपने में वह किसका चित्र खींचने लगी?
- ✸ सपने के घर में किन-किन केलिए अलग-अलग कमरे हैं?
- ✸ पूजा का कमरा कहाँ होगा?
- ✸ घर की छत किससे बना है?
- ✸ दीवारों का रंग क्या है?
- ✸ खिड़की-दरवाज़े कहाँ रख दिए?
- ✸ ज़मीन किससे बनाई जाएगी?
- ✸ कौन-कौन-सी चीज़ें घर को शोभा देंगी?
- ✸ रसोई किससे चमकेगी?
- ✸ रसोई को ज़्यादा चमक और शान कब मिलेगी?
- ✸ सपना देखनेवाली किसकी सुरक्षा में सो रही थी?
- ✸ नींद के खुलने के पहले सपने में क्या आ धमकी?

(प्रस्तुति पर आपसी निर्धारण)

विश्लेषणात्मक वाचन

➔ प्रश्न पूछें

- ✸ झोंपड़ी में कौन सो रही है?

एक मामूली मज़दूरिन

✸ 'मगर नींद के टूटने के पूर्व ही नोटीस बैंक की आ धमकी सपने में।' कवि यहाँ किस सामाजिक सच्चाई की ओर इशारा करते हैं?

उदारीकरण (Liberalisation) आज सच बन चुका है। शुरू में थोड़े समय के लिए यह समृद्धि देते हों, परंतु इसकी भीषणता में गरीब ज़्यादा गरीब बनकर नरकीय जीवन जीने को विवश बन जाता है। तब गरीबों की हालत इतनी बुरी बन जाती है कि वे सुंदर सपने भी देख नहीं पाते। इसके आने के से पूर्व गरीब अच्छे भविष्य का सपना जी भर देख सकते थे। पर अब नहीं। क्योंकि सपने के अंत के पहले ही कठोर सच्चाई उनको निराशा के गर्त में डाल देता है। उदारीकरण के श्याम पक्ष की ओर ये पंक्तियाँ इशारा करती हैं।

➔ डॉ जे बाबू की प्रोफाइल (पन्ना संख्या 67) का वाचन कराएँ।
➔ कविता का आस्वादन-टिप्पणी-लेखन।
➔ आस्वादन-टिप्पणी-लेखन की प्रक्रिया चलाएँ।
(अध्यापक दर्शिका पन्ना संख्या 24)

कविता का सारांश

उदारीकरण ने जहाँ समाज के एक वर्ग को, भले ही उसका प्रतिशत अत्यंत न्यून हो, कुछ ही वर्षों में अकल्पनीय समृद्धि दे डाली है तो दूसरी ओर जो गरीब है, गरीबी की रेखा के नीचे नरकीय जीवन जी रहा है, उसे और भी गरीब बना डाला है। इन गरीबों की हालत इतना खराब है कि वे सुहावने सपने भी नहीं देख पाते। मीठे सपने के अंत में कड़वी सच्चाई उन्हें झकझोरती है। भूमंडलीकरण के इस श्याम पक्ष की ओर यह कविता इशारा करती है।

एक कमरेवाली झोंपड़ी में रहनेवाली मज़दूरिन बच्चों के सो जाने के बाद खुद नींद की ओर सरकती चली जाती है जहाँ वह अपनी झोंपड़ी की जगह दुमंज़िली इमारत का सपना देखती है। उसके इस घर में खाने-पीने-सोने के अलग-अलग कमरे हैं। पूजा का अलग कमरा ऊपर की मंज़िल में है। मकान की छत कांक्रीट की है, ज़मीन पर संगमरमर है। घर में मेज़-कुर्सियाँ, टी.वी., होम थियेटर जैसी सुख-सुविधाएँ प्रदान करनेवाली सारी चीज़ें हैं। रसोईघर की शान बढ़ाने के लिए फ्रिड्ज और माइक्रोवेव हैं।

सपने में अपने दुमंज़िले घर में शान से रहने के कारण मज़दूरिन को बड़े सबेरे उठने की ज़रूरत नहीं। वह मसहरी की सुरक्षा में, धूप के फैलने तक नींद में पड़ी रहती है लेकिन तभी इस सुहावने मीठे सपने को कड़ुआ बनाते हुए सच्चाई बैंक नोटीस के रूप में आ धमकती है। आज के उदारतावादी माहौल में सैंकडों की संख्या में नई पीढ़ी के बैंक उग आए हैं। वे अपनी आकर्षक ऋण योजनाओं से आम जनता को अपनी ओर आकर्षित करते हैं। गरीब ऋण लेते हैं पर ऋण का भुगतान नहीं कर पाते। बैंक से आ धमकनेवाली नोटीस की भीषणता में जीने को विवश बन जाते हैं। आज की इस कड़वी सच्चाई की ओर कविता संकेत करती है।

मुरकी उर्फ़ बुलाकी

अधिगम उपलब्धियाँ

3.3 समकालीन कहानी की अवधारणा पाकर कहानी के पात्रों के चरित्र पर टिप्पणी लिखता है।

3.4 कहानी के आशय का विश्लेषण करके विभिन्न प्रसंगों का विधांतरण करता है।

आशय/धारणा

- समकालीन कहानियों की अपनी विशेष शैली है।
- कहानी के आशय का विधांतरण संभव है।
- समाज में नारी-शोषण है।

समय : 8 घंटे

सहायक सामग्री : वीडियो

गतिविधियाँ

- प्रवेशकार्य चलाएँ।
- नारी-शोषण से संबंधित वीडियो का प्रदर्शन।
- अध्यापिका प्रश्न पूछें।

जैसे :
- वीडियो में कौन-कौन से दृश्य हैं?
- दृश्यों में किसके प्रति अत्याचार हो रहा है?
- क्या असल में ऐसी घटनाएँ समाज में होती हैं?
- ऐसे अत्याचारों के खिलाफ़ हम क्या कर सकते हैं?

- संक्षिप्तीकरण

यह सच्चाई है कि समाज में स्त्रियों के खिलाफ़ कई प्रकार के अत्याचार हो रहे हैं। एक स्वस्थ समाज के निर्माण में ऐसी घटनाएँ बाधा उत्पन्न करती हैं। इसलिए इनके खिलाफ़ आवाज़ उठाना एक नागरिक का कर्तव्य है। नारी शोषण की घटना बतानेवाली एक कहानी हम पढ़ेंगे।

➔ 'नारी विषयक कहानी' शीर्षक खंड का वाचन कराएँ।
(पन्ना संख्या 109)

सूचनात्मक वाचन

➔ अध्ययन की सुविधा के लिए कहानी को दो-चार भागों में बाँट सकते हैं।

➔ कहानी के अपरिचित शब्दों का अर्थ ढूँढ़ लें।

➔ कहानी का वैयक्तिक रूप से वाचन।

➔ सूचनात्मक और विश्लेषणात्मक प्रश्न क्रमानुसार पूछा जाएँ।

- कुमार ने माँ से क्या पूछा?
- कुमार ने मुरकी को कहाँ देखा था?
- मुरकी का बाप कौन था?
- मुरकी के बाप ने राजवंती से क्या विनती की?
- राजवंती के यहाँ आते वक्त मुरकी देखने में कैसी थी? उसका वर्णन कैसे किया गया है?
- राजवंती लड़की को क्या कहकर पुकारती थी?
- उड़ते पंछी भी कब खड़े हो जाते थे?
- बाप ने किसके साथ मुरकी का रिश्ता कर दिया? वह कैसा लड़का था?
- मुरकी किसके साथ भाग गई?
- शहरी लड़का का काम क्या था?
- शहरी लड़के ने कैसे घर बनवाया?
- लड़का मुरकी को कहाँ छोड़ा? कब?
- मुरकी राजवंती के घर कैसे पहुँची?
- राजवंती ने मुरकी के साथ क्या वादा किया था?
- कुमार ने क्या प्रण लिए थे?
- मुरकी की मृत्यु के समय कोठरी की चाबी कहाँ थी?
(सही प्रस्तुति पर स्वनिर्धारण)

विश्लेषणात्मक वाचन

➔ अध्यापिका प्रश्न पूछें एवं चर्चा चलाएँ।

जैसे : ✸ 'न कोई जन्मनेवाला और न कोई सहेजनेवाला'-मुरकी के बारे में माँ ऐसा क्यों कहती हैं?

मुरकी को माँ नहीं थी। पिता ने उसे नौकरानी के रूप में दूसरे घर में छोड़ दिया। उसके संरक्षण के लिए कोई अपना नहीं था। शादी के बाद भी उसकी दशा बुरी थी।

✸ राजवंती लड़की को मुरकी और बुलाकी क्यों पुकारती थी?

लड़की के कानों में चाँदी की मुरकियाँ थीं और नाक में सोने का छोटा-सा बुलाक था।

✸ राजवंती कहती थी "री मुरकी! किसके कानों में पड़ेगी? और किसकी नाक में बुलाक की तरह चमकेगी?" -इसका क्या तात्पर्य है?

मुरकी का बढ़ता सौंदर्य देखकर राजवंती सोचती थी कि मुरकी से शादी करनेवाला ज़रूर बड़ा भाग्यवान होगा। वर उसका अनुरूप होगा।

✸ मुरकी शहरीवाले लड़के के साथ क्यों भाग गई?

मुरकी के बाप ने उसकी शादी एक विधुर एवं बुरे व्यक्ति से पक्की कर दी।

✸ शहरी लड़के ने मुरकी के प्यार का फ़ायदा कैसे उठाया ?

लड़के ने मुरकी के सारे गहने बेचकर घर बनवाया।

✸ कुमार की आँखों का पानी आँखों में ही रहा। राजवंती की आँखें छलक पड़ी। दोनों ने मन की संवेदनाएँ किस प्रकार प्रकट की?

मुरकी की कहानी सुनकर कुमार का मन वेदना से भर गया। पुरुष होने के कारण आँसू बहाकर अपनी वेदना प्रकट नहीं की। स्त्री की प्रकृति के अनुरूप राजवंती अपनी वेदना रोक नहीं पाई कि उसकी आँखें छलक पड़ी।

✸ "शायद मर्द जात की कोई लाज रखने के लिए!"-कुमार के चरित्र की कौन-सी विशेषता यहाँ प्रकट होती है?

सच्चा पुरुष स्त्री जाति का आदर करता है, उनका देखभाल करता है, उनकी वेदना पहचानता है।

✸ राजवंती ऐसी रोई जैसे उसकी आँखों में मुरकी के आँसु मिले हुए थे, और सिर्फ मुरकी के नहीं, सारी औरत जाति के आँसु मिले हुए थे। ऐसा क्यों कहा गया है?

दुनिया की शोषित नारी का प्रतीक है मुरकी। एक नहीं, कई मुरकी हमारे चारों ओर है। औरत की दुरवस्था और दुख पर संवेदना प्रकट करना औरत का आदर करना है।

(चर्चा की भागीदारी पर आपसी निर्धारण एवं सही प्रस्तुति पर अध्यापिका का निर्धारण)

➔ सही मिलान (पन्ना संख्या 74)
(प्रस्तुति पर स्वनिर्धारण)

➔ लेखिका की प्रोफाइल का वाचन कराएँ। (पन्ना संख्या 74)

➔ कथनों के आधार पर चरित्र पर टिप्पणी-लेखन। (पन्ना संख्या 75)

➔ टिप्पणी-लेखन की प्रक्रिया चलाएँ।

- कथनों का वाचन।
- कथनों के प्रसंगों की पहचान।
- प्रसंगानुसार कथनों का विश्लेषण।
- विश्लेषण के आधार पर पात्र के चरित्र की पहचान।
- चरित्र का टिप्पणी के रूप में लेखन।

(टिप्पणी पर अध्यापिका का निर्धारण)

➔ वार्तालाप लेखन (पन्ना संख्या 75)

➔ वार्तालाप लेखन की प्रक्रिया चलाएँ।

- प्रसंग की पहचान।
- मुरकी के आत्मसंघर्ष की पहचान।
- राजवंती की उत्सुकता की पहचान।
- पात्रानुकूल बातचीत का चयन।
- उचित शुरुआत एवं समाप्ति का चयन।
- स्वाभाविक वार्तालाप लेखन।

(सूचकों के आधार पर वार्तालाप पर अध्यापिका का निर्धारण)

➔ आत्मकथांश-लेखन (पन्ना संख्या 75)

➔ आत्मकथांश-लेखन की प्रक्रिया चलाएँ।

- कहानी का आशयग्रहण।
- आशय का विश्लेषण।
- आत्मकथा की शैली की पहचान।
- सूचकों के आधार पर घटनाओं का चयन।
- घटनाओं का विकास।
- पात्र की संवेदना की पहचान।
- पात्र की संवेदना का आत्मसात करना।
- संवेदना के साथ घटनाओं की आत्मनिष्ठ भाषा में अभिव्यक्ति।

(सूचकों के आधार पर (पन्ना संख्या 76) आत्मकथांश की निजी परख)

हाइकू

अधिगम उपलब्धियाँ

3.5 हाइकू कविता की विशेष शैली पहचानकर उसकी व्याख्या करता है।

आशय/धारणा

- हाइकू मूल रूप से जापानी कविता रूप है।
- गागर में सागर भरने की क्षमता हाइकू में है।

समय : 3 घंटे

सामग्री : चित्र

गतिविधियाँ

- प्रवेशकार्य चलाएँ।
- पौधे के चित्र की प्रस्तुति।
- प्रश्न पूछें।

जैसे :
- यह किसका चित्र है?
- इससे धरती को क्या लाभ है?

- संक्षिप्तीकरण

पौधा छोटे-से बीज से उत्पन्न होता है। सारी धरती को वह हरा करता है। छोटे होने से महत्व कम नहीं होता। रहीम ने कहा है - 'जहाँ काम आवै सुई, कहा करै तरवारी' अर्थात् सुई का काम सुई ही कर सकता है, तलवार नहीं कर सकता। उसी प्रकार कविता छोटी होनी पर भी उसमें संवेदना की क्षमता है तो वह श्रेष्ठ बनता है। उसका उदाहरण है हाइकू कविताएँ। कुछ हाइकू कविताओं से परिचय पाएँगे।

- पाद टिप्पणी (पन्ना संख्या 79) का वाचन कराएँ।
- हाइकू का वाचन छात्र वैयक्तिक रूप से करें।
- अपरिचित शब्दें का अर्थ ढूँढ़ लें।
- प्रश्न पूछें।

हाइकू - 1

- नीड़ पेड़ से कब गिर पड़ता है?
- तब माँ क्या करती है?
- यहाँ किसकी ममता का वर्णन कवि करते हैं?
- इसका मूलभाव क्या है?

माँ की ममता का महत्व।

हाइकू - 2

- भाद्रपद महीने की विशेषता क्या है?
- विरहिणी का सूखा आँगन से तात्पर्य क्या है?
- हाइकू का मूलभाव क्या है?

विरह की पीड़ा बड़ा दर्दनाक है।

हाइकू - 3

- न मानने पर भी कौन मेहमान बनकर आता है?
- हाइकू का मूलभाव क्या है?

परिवर्तन एक सच्चाई है।

हाइकू - 4

- खेतों में कौन कविताएँ बोता है?
- वर्षा क्यों धन्य है?
- हाइकू का मूलभाव क्या है?

धरती का जीवनदायक है वर्षा। किसान के तनतोड़ मेहनत से वर्षा की जीवनदाई शक्ति प्रकट होती है।

हाइकू - 5

- बाग में फूल खिलने पर किसकी याद आती है?
- हाइकू का मूलभाव क्या है?

प्रेमी-प्रेमिका के मन में प्रेम की यादें सदा हरी रहती हैं।

हाइकू - 6

- ✸ वेदना का अहसास न करनेवाले के सामने आँसु किसके समान है?
- ✸ हाइकू का मूलभाव क्या है?

दूसरों की वेदना पहचानना ही मानवता है।

- ➔ लेखक की प्रोफाइल (पन्ना संख्या 81) का वाचन कराएँ।
- ➔ प्रत्येक हाइकू की आस्वादन-टिप्पणी लिखें।
  (आस्वादन-टिप्पणी पर अध्यापिका का निर्धारण)
- ➔ किन्हीं दस हाइकू कविताओं का संकलन करें।
- ➔ संकलित हाइकू कक्षा में प्रस्तुत करें।
- ➔ हाइकू-लेखन।
- ➔ छात्रों को ग्रूपों में बाँटें।
- ➔ प्रत्येक ग्रूप को अलग-अलग विषय दें।
- ➔ ग्रूप में चर्चा करके विषय के आधार पर हाइकू कविताएँ लिखें।
- ➔ प्रत्येक ग्रूप की ओर से प्रस्तुति।

बुझा दीपक जला दो

मानव को जानवर से अलगानेवाला तत्व उसमें विहित विवेक, दया, ममता और मानवता है। आज की पीढ़ी में इन भावनाओं की कमी की बात की जाती है। इकाई का हर पाठ हमारे भीतर मानवता की, परोपकार की ज्योति जलाने की प्रेरणा प्रदान करता है। पहला पाठ मलयालम के विख्यात कवि श्री. ओ.एन.वी. कुरुप की मलयालम कविता का हिंदी अनुवाद है जिसमें भगवान पर चढ़ाने के फूल बेचनेाली निरीह बालिका को फूल का दाम देकर उसकी भूख मिटाने में सहायता करने को ही श्रेष्ठ पुण्य कर्म समझनेवाले भक्त को दर्शाया गया है। दूसरे पाठ 'वह भटका हुआ पीर' में अपनी ही गाड़ी में अपने खर्च से दिल्ली के रास्ते पर प्यासों को पानी पिलानेवाले स्कूटर पीर का चित्रण है। इकाई का तीसरा पाठ कुंवर नारायण की एक कविता है 'आदमी का चेहरा' जिसमें अपने सामान उठानेवाले कुली को लंबे अरसे के बाद इनसान के रूप में पहचाननेवाले व्यक्ति का चित्र है। कुली, नौकर और मज़दूर भी मनुष्य ही होते हैं। उनसे हमें हमदर्पो से पेश आना चाहिए। अंतिम पाठ हरिशंकर परसाई का व्यंग्य लेख है जो जीवन की अस्थिरता की याद दिलाता है।

कुमुद फूल बेचनेवाली लड़की

मूल्य एवं मनोभाव : गरीबों की सेवा ईश्वर की सेवा है।

समय : 5 घंटे

आशय/धारणा	गतिविधियाँ एवं निर्धारण	अधिगम उपलब्धियाँ
➢ हिंदी का अनूदित साहित्य संपन्न है। ➢ मलयालम की कई रचनाओं का अनुवाद हिंदी में संपन्न है। ➢ परोपकार ही सच्ची उपासना है।	➔ प्रवेश-कार्य ➔ कविता का वाचन (स्वनिर्धारण) ➔ प्रश्नों के जरिए चर्चा (आपसी निर्धारण) ➔ सही शब्दों का चयन (आपसी निर्धारण) ➔ आस्वादन टिप्पणी लेखन (अध्यापिका का निर्धारण) ➔ टिप्पणी-लेखन (अध्यापिका का निर्धारण) ➔ अनुदित कविताओं का संकलन	♦ मलयालम कविता के आशय का विश्लेषण करके आस्वादन टिप्पणी लिखता है।

वह भटका हुआ पीर

मूल्य एवं मनोभाव : दूसरों का प्यास बुझाकर खुद देवता बन सकता है।

समय : 6 घंटे

आशय/धारणा	गतिविधियाँ एवं निर्धारण	अधिगम उपलब्धियाँ
➢ संस्मरण की अपनी शैलीगत विशेषताएँ हैं।	➔ प्रवेश-कार्य ➔ वाचन प्रक्रिया (स्वनिर्धारण) ➔ विश्लेषणात्मक प्रश्नों द्वारा चर्चा। (आपसी निर्धारण) ➔ समाचार की तैयारी (अध्यापिका का निर्धारण) ➔ चरित्र पर टिप्पणी-लेखन (अध्यापिका का निर्धारण) ➔ अनुभव की प्रस्तुति	♦ संस्मरण की शैलीगत विशेषताओं से अवगत होकर विभिन्न प्रसंगों का विधांतरण करता है।

आदमी का चेहरा

मूल्य एवं मनोभाव : सभी श्रमों का आदर करना है।

समय : 5 घंटे

आशय/धारणा	गतिविधियाँ एवं निर्धारण	अधिगम उपलब्धियाँ
➢ स्मकालीन कविताओं में सर्वहारा वर्ग का चित्रण है। ➢ सभी श्रमों का अपना महत्व है।	➔ प्रवेश-कार्य ➔ कविता पाठ ➔ वाचन प्रक्रिया ➔ विश्लेषणात्मक प्रश्नों के ज़रिए चर्चा (आपसी निर्धारण) ➔ आस्वादन टिप्पणी-लेखन (अध्यापिका का निर्धारण)	♦ समकालीन कविता की विशेषताएँ पहचानकर आस्वादन-टिप्पणी लिखता है।

दवा

मूल्य एवं मनोभाव : व्यंग्य में सोचने की प्रेरणा मिलती है।

समय : 5 घंटे

आशय/धारणा	गतिविधियाँ एवं निर्धारण	अधिगम उपलब्धियाँ
➢ हिंदी का व्यंग्य साहित्य संपुष्ट है। ➢ व्यंग्य में आस्वादकों के मन को चुभने की क्षमता है।	➔ प्रवेश-कार्य ➔ वाचन प्रक्रिया (स्वनिर्धारण) ➔ पात्रों से संबंधित कथन का चयन (स्वनिर्धारण) ➔ विज्ञापन की तैयारी (अध्यापिका का निर्धारण) ➔ संवाद की पूर्ती (अध्यापिका का निर्धारण) ➔ स्किट की प्रस्तुति	♦ व्यंग्य की प्रासंगिकता पहचानकर आस्वादन करता है और टिप्पणी लिखता है। ♦ व्यंग्य के आशय का विश्लेषण करके प्रसंगों का विधांतरण करता है। ♦ विभिन्न सामाजिक विषयों की अवधारण पाकर उसे स्किट के रूप में प्रस्तुत करता है।

कुमुद फूल बेचनेवाली लड़की

अधिगम उपलब्धियाँ

4.1 अनूदित कविता के आशय का विश्लेषण करके आस्वादन-टिप्पणी लिखता है।

आशय/धारणा

- हिंदी का अनूदित साहित्य संपन्न है।
- मलयालम से अनूदित कई रचनाएँ हिंदी में है।
- परोपकार ही सच्ची उपासना है।

समय : 5 घंटे

सामग्री : वीडियो

गतिविधियाँ

- प्रवेशकार्य चलाएँ।
- वीडियो की प्रस्तुति।
- अध्यापिका प्रश्न पूछें।

जैसे :
- वीडियो का दृश्य क्या है?
- किस प्रकार की रचनाओं को वीडियो सूचित करती है?
- छात्रों की प्रतिक्रिया
  (प्रतिक्रिया पर आपसी निर्धारण)

- संक्षिप्तीकरण

साहित्यिक अनुवाद उच्चकोटि का सृजन है। आज विश्वभर की साहित्यिक रचनाओं का अनुवाद हिंदी में हो रहा है। यथा मलयालम की कई रचनाओं का अनुवाद भी हिंदी में होता है। पढ़ें, मलयालम के मशहूर कवि ओ.एन.वी. कुरुप की कविता का अनूदित रूप।

➔ 'साहित्यिक अनुवाद' शीर्षक खंड (पन्ना संख्या 110) का वाचन कराएँ।

➔ पन्ना संख्या 84 के संक्षिप्तीकरण का वाचन भी कराएँ।

सूचनात्मक वाचन

➔ छात्र वैयक्तिक रूप से कविता का वाचन करें।

➔ दो-एक छात्र द्‌वारा कविता की प्रस्तुति।

➔ अध्यापिका द्‌वारा कविता की प्रस्तुति।

➔ कविता से अपरिचित शब्दों का अर्थ ढूँढ़ लें।

➔ अध्यापिका प्रश्न पूछें।

जैसे :
- ✸ मंदिर के रास्ते में किसके दल थे?
- ✸ इष्टदेव का इष्टनैवेद्‌य क्या है?
- ✸ लटके हुए लंबे डंठलों की तुलना कवि ने किससे की है?
- ✸ कवि के सम्मुख आई लड़की किसके समान थी?
- ✸ कवि ने लड़की के हाथ में क्या रख दिया?
- ✸ 'हाय! मुरझा रहे दो सुरम्य सुकोमल रूप'- कौन-कौन से हैं?
- ✸ कवि ने फूल लेकर देव को समर्पित करने के बदले क्या किया?

(सही प्रस्तुति पर आपसी निर्धारण)

➔ वाक्यांशों से संबंधित शब्द का चयन।

(सही चयन पर स्वनिर्धारण)

➔ ओ.एन.वी. कुरुप की प्रोफाइल का वाचन (पन्ना संख्या 86)

➔ डॉ तंकमणि अम्मा की प्रोफाइल का वाचन (पन्ना संख्या 88)

➔ आस्वादन-टिप्पणी लेखन

➔ आस्वादन-टिप्पणी लेखन की प्रक्रिया चलाएँ।

(अध्यापक दर्शिका पन्ना संख्या 24)

(आस्वादन टिप्पणी पर अध्यापिका का निर्धारण)

➔ कवितांश की प्रासंगिकता पर टिप्पणी-लेखन।

➔ टिप्पणी-लेखन की प्रक्रिया चलाएँ।

- अध्यापिका कवितांश प्रस्तुत करें।
- कवितांश के आशय पर चर्चा चलाएँ।
  - कवि किसे कहाँ ढूँढ़ रहा था?
  - ईश्वर कवि को कहाँ खोज रहा था?
  - कवितांश और 'कुमुद फूल बेचनेवाली लड़की' कविता के भाव में कोई समानता है?
  - दोनों कविताओं का मूलभाव क्या है?
- वर्तमान सामाजिक परिस्थिति पर चर्चा।
- वर्तमान सामाजिक परिस्थिति में 'अन्वेषण' कवितांश की प्रासंगिकता पर चर्चा।
  (चर्चा की भागीदारी पर आपसी निर्धारण)
- चर्चा के आधार पर वैयक्तिक रूप से टिप्पणी-लेखन।
  (सूचकों के आधार पर -पन्ना संख्या 87-टिप्पणी की निजी परख)

'अन्वेषण' कविता में कवि ईश्वर की खोज करने निकलते हैं। कवि खुश और सुंदर वातावरण में ईश्वर को ढूँढ़ता रहा। परंतु कहीं नहीं मिला। अंत में कवि ने पहचान लिया, ईश्वर सुख-सुविधाओं में नहीं, दीन-दुखियों में रहते हैं। अर्थात् दीन-दुखियों की सेवा ही ईश्र सेवा है।

कविता का सारांश

कवि एक बार गोवा के प्रसिद्ध श्री मंगेश मंदिर गए। अपने निजी अनुभव के आधार पर उन्होंने यह कविता रची। उन्होंने मंदिर के निकट कुमुद सरोवर देखा, मंदिर को जानेवाले रास्ते में पूजाद्रव्य बेचनेवाले कई दलों को देखा। उनमें कुमुद फूल बेचनेवाले कुछ लड़कियाँ भी थीं। वे मार्गदर्शी के समान कोने में पड़ी कह रही थी कि उस मंदिर के इष्ट देव का इष्ट नैवेद्य कुमुद फूल है। मृत जलसाँप जैसे लंबे डंठलवाले कुमुद फूल लिए उनमें से हर एक कह रही थी मेरे हाथ से ले ले, मेरे हाथ से ले ले। कवि की दृष्टि उनमें से एक लड़की पर पड़ी। वह मुर्झाए फूल के सूखे डंठल के समान दुबली पतली थी। वह दीन स्वर में प्रार्थना कर रही थी कि उसके हाथों के फूल ले ले। कवि ने अपनी ओर बढ़े उस लड़की के हाथ में फूल के दाम के रूप में एक सिक्का रखा। तभी उनका ध्यान लड़की के मुख की ओर गया। लड़की के हाथ का फूल और उसका मुख दोनों मुर्झाए हुए थे। कवि को लगा कि फूल ही लड़की का अन्न है। ऐसे में फूल का दाम देकर लड़की की भूख मिटाने में उन्होंने जो हाथ बँटाया उससे बढ़कर पुण्य, फूल को नैवेद्य के रूप में चढ़ाने पर नहीं मिलेगा। अतः वे बिना फूल लिए खाली हाथ आगे बढ़े।

ओ.एन.वी कुरुप प्रगतिशील कवि है। उनकी दृष्टि में बेबस भूखी लड़की की भूख मिटाने से बढ़कर पुण्य का काम नहीं है, ईश्वर की मूर्ति पर फूल चढ़ाना।

वह भटका हुआ पीर

अधिगम उपलब्धियाँ

4.2 संस्मरण की शैलीगत विशेषताओं से अवगत होकर विभिन्न प्रसंगों का विधांतरण करता है।

आशय/धारणा

- संस्मरण की अपनी शैलीगत विशेषताएँ हैं।

समय : 6 घंटे

सामग्री : चित्र/वीडियो

गतिविधियाँ

- प्रवेशकार्य
- मदर तेरेसा की वीडियो की प्रस्तुति।
- अध्यापिका प्रश्न पूछें।
  - यह वीडियो किससे संबंधित है?
  - इस वीडियो से हमारे मन में कौन-सा भाव उत्पन्न होता है?
- संस्मरण शीर्षक खंड का वाचन कराएँ। (पन्ना संख्या 110)

सूचनात्मक वाचन

- छात्र द्वारा संस्मरण का वैयक्तिक वाचन।
- अपरिचित शब्दों का अर्थ ढूँढ़ लें।
- अध्यापिका प्रश्न पूछें।
  - लेखिका को कब भटके हुए पीर की याद आती है?
  - गुलमोहर की विशेषता क्या है?
  - पीर क्या करता है?
  - लेखिका किसकी इंतज़ार कर रही थी?
  - संस्मरण में 'स्कूटर' किसको सूचित करता है?
  - पार्लियामेंट स्ट्रीट तक जाते-जाते उसने दर्जनों बार स्कूटर क्यों रोका?

- ✸ स्कूटरवाले की माँ ने उपदेश के रूप मे क्या कहा?
- ✸ स्कूटरवाले को कब सुकून मिलता है?
- ✸ गर्मी के दिन स्कूटरवाले ने लेखिका के घर के सामने आकर क्या पूछा?
- ✸ लाखों लोगों की दुआओं से स्कूटरवाले को क्या लाभ मिला?

विश्लेषणात्मक वाचन

➔ प्रश्न पूछें।

- ✸ लेखिका ने स्कूटरवाले की तुलना गुलमोहर से क्यों की है?

गुलमोहर गर्मी के दिनों में अपने पत्तों का छाता फैलाकर सबको शीतलता देती है। इसी प्रकार स्कूटरवाले भी प्यासे राहगीरों को पानी पिलाता है, राहत देता है।

- ✸ लेखिका को स्कूटरवाला पीर जैसा लगा। क्यों?

यहाँ तक कि घर के बड़े बुजुर्गों को कोई पानी नहीं पिलाता और पानी माँगने पर जलती आँखों से देखता है। लेकिन स्कूटरवाला प्यार से सब लोगों का प्यास बुझाता है।

- ✸ वह पूजा के लिए कहीं भी न बैठकर लोगों के दिल में जगह बनाता है - इस वाक्य का क्या तात्पर्य है?

दूसरों को पानी पिलाकर स्कूटरवाला श्रद्धा एवं उपासना का पात्र बन गया।

- ✸ स्कूटरवाला कैसे अपने मन का बादशाह बन गया?

अपनी मर्ज़ी के अनुसार काम करते हुए दूसरों की सेवा करनेवाले स्कूटरवाला अपने मन का बादशाह है। उसने अपने मन की स्वार्थता को जीत लिया है।

➔ राज बुद्धिराजा की प्रोफाइल (पन्ना संख्या 92) का वाचन।

➔ समाचार की तैयारी।

➔ समाचार लेखन की प्रक्रिया चलाएँ।

- समाचार के प्रसंग का चयन। (स्कूटरवाले के बारे में)
- घटनाओं का चयन। (सहायक संकेत -पन्ना संख्या 92)
- घटनाओं का समग्र, पर संक्षिप्त रूप से लेखन।
- समाचार की भाषा-शैली की स्वीकृति (भूतकालिक क्रियाओं का प्रयोग अधिक रूप से)।
- उचित एवं आकर्षक शीर्षक का चयन।

(सूचकों के आधार पर - पन्ना संख्या 93 - समाचार की निजी परख)

समाचार की टीचर वेर्शन।

स्कूटर जो पानी पिलाता है

दिल्लीः दिल्ली की दुपहरियाँ आग की तरह गरम हैं। मानव और पशु-पक्षी प्यास के मारे गली-गली में तड़प रहे हैं। ऐसा कहा जाता है कि विधाता जब अपनी आँखें बंद करता है, तब कोई महामानव विधाता के लिए अपनी आँखें खोल देता है। दिल्ली की सड़कों पर अपनी मधुर वाणी में 'पानी पिएँगे' कहते हुए शहगीरों की प्यास बुझानेवाला युवक दिल्लीवासियों के लिए विधाता जैसा है। पितृविहीन युवक अपनी माँ के उपदेश को पूरी तरह निभा रहा है। अपनी आजीविका के लिए दिल्ली की सड़कों पर स्कूटर चलानेवाला यह 'पीर' अपने ही पैसे से मशक में पानी भरकर गली-गली में स्कूटर रोकता है और प्यासों को मुफ़्त पानी पिलाता जाता है। राहगीरों और स्कूटर यात्रियों के दिलों से रिश्ता जोड़नेवाला यह 'पीर' भलाई का मानवी रूप बन गया है।

➔ स्कूटरवाले के चरित्र पर टिप्पणी करते हुए वर्तमान समाज में ऐसे लोगों की प्रसंगिकता पर प्रकाश डालिए।

➔ प्रक्रियाएँ चलाएँ।

- स्कूटरवाले के चरित्र का विश्लेषण।
- चरित्र की खूबियों की पहचान।
- निम्नलिखित मुद्दों पर चर्चा
- वर्तमान समाज की दशा।
- घटती मानवता।
- स्कूटरवाले जैसे लोगों की आवश्यकता।
- स्कूटरवाले जैसे लोगों की प्रासंगिकता पर टिप्पणी लेखन।

आदमी का चेहरा

अधिगम उपलब्धियाँ

4.3 समकालीन कविता की विशेषताएँ पहचानकर आस्वादन टिप्पणी लिखता है।

आशय/धारणा

- समकालीन कविताओं में सर्वहारा वर्ग का चित्रण है।
- सभी श्रमों का अपना महत्व है।

समय : 5 घंटे

सहायक सामग्रीः चित्र/वीडियो

गतिविधियाँ

- प्रवेशकार्य चलाएँ
- विभिन्न काम-धंधों से संबंधित वीडियो/चित्र का प्रदर्शन।
- अध्यापिका प्रश्न पूछें।
  - वीडियो का दृश्य क्या है?
  - इसमें कौन-सा काम आपको अधिक पसंद आया?
  - इस वीडियो में दिखाए गए कामों के महत्व पर आपकी राय क्या है?
- संक्षिप्तीकरण

> हर काम का अपना महत्व है। कोई भी काम हीन नहीं। काम का महत्व काम करनेवाले के काम करने के तरीके पर निर्भर है।

- उक्ति एवं खंड का वाचन कराएँ (पन्ना संख्या 95)
- 'समकालीन कविता' शीर्षक खंड का वाचन कराएँ। (पन्ना संख्या 111)

सूचनात्मक वाचन

- ➔ छात्र कविता का वैयक्तिक वाचन करें।
- ➔ दो-चार छात्र कविता प्रस्तुत करें।
- ➔ अध्यापक द्‌वारा कविता की प्रस्तुति।
- ➔ कविता के अपरिचित शब्दों का अर्थ ढूँढ़ लें।
- ➔ प्रश्न पूछें।

जैसेः
- ✸ कौन कवि के पास आकर खड़ा हो गया?
- ✸ कुली किसके दस कदम आगे बढ़ने लगा?
- ✸ कवि कुली को कैसे पहचानता था?
- ✸ कवि को कब एक आदमी का चेहरा याद आया?

विश्लेषणात्मक वाचन

- ➔ प्रश्न पूछें।

जैसेः
- ✸ कुली को आदमी के रूप में पहचानने से पहले कुली के साथ कवि की यात्रा कैसी थी?

कुली सिर पर सामान लादकर कवि के दस कदम आगे चलता था। अर्थात् कवि कुली को अपने से तुच्छ समझकर उसके साथ नहीं, पीछे चलता था।

- ✸ कुली को आदमी मानने के पहले कवि उसको किस रूप में पहचाना था?

कवि कुली को उसकी लाल कमीज़ पर टँके नंबर से पहचानता था, चेहरे से नहीं।

- ✸ सामान खुद उठाते वक्त कवि के दिमाग में कौन-सा विवेक पैदा हुआ?

कुली भी एक आदमी है, उसके भी विचार और भावनाएँ हैं।

- ✸ कुली कहकर पुकारने पर कवि को क्यों लगता है कि कुली नहीं एक इनसान आकर उसके पास खड़ा हो गया है?

अपना माल खुद उठाते वक्त कवि ने पहली बार कुली का दर्द पहचान लिया।

(सही उत्तर पर आपसी निर्धारण)

- कुंवर नारायण की प्रोफ़ाइल का वाचन। (पन्ना संख्या 96)
- आस्वादन-टिप्पणी-लेखन।
- आस्वादन-टिप्पणी-लेखन की प्रक्रिया चलाएँ। (अध्यापक दर्शिका पन्ना संख्या 24)
  (आस्वादन-टिप्पणी पर अध्यापिका का निर्धारण)

- संगोष्ठी चलाएँ।
- संगोष्ठी की प्रक्रिया चलाएँ।
- कोई छात्रा संचालिका बने।
- संचालिका विषय प्रस्तुत करे।
- चर्चा करके विषय को उपविषयों में बाँटे।

- काम संस्कृति का निशान है।
- काम व्यक्तित्व की पहचान है।
- काम सभ्यता का मापदंड है।
- काम ईमानदारी का सूचक है।

- उपविषयों के आधार पर दलों में बाँटे।
- हर दल अपने उपविषय पर प्रालेख तैयार करे।
- हर एक दल अपना प्रालेख प्रस्तुत करे।
- प्रालेख की प्रस्तुति पर अन्य दल चर्चा करे, जिससे प्रालेख की पुष्टि हो।
- प्रत्येक दल की प्रस्तुति और चर्चा के बाद संचालिका संक्षिप्तीकरण करें।
- दलों द्वारा प्रस्तुत विचारों को समेकित करके वैयक्तिक आलेख तैयार करें।
- दो-चार छात्र आलेख प्रस्तुत करें।

➔ आलेख की निजी परख

- उपक्रम है।
- विभिन्न उपविषयों को अनुच्छेदों में लिखा है।
- सभी बिंदुओं को समेकित करके अपना मत प्रकट किया है।
- अपने मत का समर्थन किया है।
- उपसंहार है।

कविता का सारांश

हमारी ज़िंदगी को सुखी बनाने में भूमिका निभानेवाले मज़दूरों, नौकरों, कुलियों के प्रति हमारा रवैया अक्सर रूखा होता है। अपने मद में, अहंकार में हम मान लेते हैं कि उनकी सेवाएँ हमारे लिए हमेशा बनी रहेंगी। वे हमारे लिए मर मिटने को ही जन्मे हैं। इस कविता का 'मैं' अक्सर अपना सामान कुलियों से उठाता है। वह अपने आपको श्रेष्ठ और कुली को तुच्छ, हेय समझने के कारण हमेशा कुली से दस कदम पीछे चलता है। वह कुली की तरफ़ देखता भी नहीं है। वह किसी भी कुली को उसके चेहरे से पहचानता नहीं है। कुली की पहचान उसकी लाल कमीज़ और उसपर टँके नंबर से ही है। वह यह भूल जाता है कि कुली भी एक मनुष्य है। एक बार उसे अपना सामान खुद उठाना पड़ा। ज़िंदगी में पहली बार उसे कुली के दर्द की, मुसीबत की पहचान होती है। तभी कुली उसके लिए महज़ एक नंबर से एक व्यक्ति बन जाता है। तब से जब भी वह कुली पुकारता है, उसे लगता है कि एक आदमी उसके पास आकर खड़ा हो गया है। देश की उन्नति में भागीदार सिर्फ ऊँचे तबके के लोग नहीं होते - मज़दूर, कर्मचारी, कुली सबकी अपनी-अपनी भूमिकाएँ होती हैं। हमें सबके श्रम का आदर करना चाहिए।

दवा

अधिगम उपलब्धियाँ

4.4 व्यंग्य की प्रासंगिकता पहचानकर आस्वादन करता है और टिप्पणी लिखता है।

4.5 व्यंग्य के आशय का विश्लेषण करके प्रसंगों का विधांतरण करता है।

4.6 विभिन्न सामाजिक विषयों की अवधारणा पाकर उसे स्किट के रूप में प्रस्तुत करता है।

आशय/धारणा

- हिंदी का व्यंग्य साहित्य संपन्न है।
- व्यंग्य में आस्वादकों के मन को चुभाने की क्षमता है।

समय : 5 घंटे

सामग्री : वीडियो

गतिविधियाँ

- प्रवेशकार्य चलाएँ।
- वीडियो का प्रदर्शन।
- चर्चा चलाएँ।
  - वीडियो आपको कैसा लगा?
  - ऐसे दृश्यों की ज़रूरत क्या है?
- संक्षिप्तीकरण

लोग हँसी-मज़ाक पसंद करते हैं। हँसी-मज़ाक अयुक्तिपूर्ण भी हो सकता है। परंतु जब युक्तिपूर्ण ढंग से मज़ाक के रूप में सोचने की भी प्रेरणा मिलती है, तब वह व्यंग्य बन जाता है।

- कार्टून का वाचन (पन्ना संख्या 98)
- 'व्यंग्य साहित्य' शीर्षक खंड का वाचन कराएँ। (पन्ना संख्या 111)

सूचनात्मक वाचन

➔ छात्र द्वारा कहानी का वाचन।

➔ अपरिचित शब्दों का अर्थ ढूँढ़ लें।
(सही चयन पर स्वनिर्धारण)

➔ अध्यापिका प्रश्न पूछें।

जैसे :
- किसकी ज़िंदगी का अंतिम क्षण आ गया था?
- डॉक्टरों ने क्या कहा?
- पत्नी की विनती क्या थी?
- कवि के मित्र ने क्या कहा?
- मित्र ने कवि के मुँह से क्या सुनने की इच्छा प्रकट की?
- कवि के लड़के ने कमरे में क्या दृश्य देखा?
(सही प्रस्तुति पर आपसी निर्धारण)

➔ कथन के अनुसार पात्र का चयन (पन्ना संख्या 100)।
(सही चयन पर स्वनिर्धारण)

विश्लेषमात्मक वाचन

➔ अध्यापिका प्रश्न पूछें।

- मित्र की बात सुनते ही अनंग जी उठकर बैठ गए। इसमें कौन-सा व्यंग्य है?

प्रशंसा सुनकर लोग अपने को भूल जाते हैं।

➔ हरिशंकर परसाई की प्रोफ़ाइल (पन्ना संख्या 100) का वाचन कराएँ।

➔ विज्ञापन की तैयारी। (पन्ना संख्या 100)

➔ विज्ञापन की प्रक्रिया पर चर्चा चलाएँ।

- सामग्री की पहचान।
- खूबियों का चयन।
- खूबियों को अभिव्यक्त करने योग्य शब्द/वाक्यांश/वाक्यों का चयन।
- आकर्षक रूपरेखा की तैयारी।

- सूचकों (पन्ना संख्या 101) के आधार पर विज्ञापन की निजी परख
- संवाद-लेखन की प्रक्रिया चलाएँ।
- छात्रों को तीन ग्रूपों में बाँटें।
- हर एक ग्रूप को अलग-अलग प्रसंग दें।
- ग्रूप में चर्चा करके संवाद तैयार करें।
- प्रत्येक ग्रूप की ओर से प्रस्तुति।
- तीनों संवादों को जोड़कर स्किट की स्क्रिप्ट तैयार करें।
- चयनीत छात्रों द्‌वारा स्किट की प्रस्तुति।
- अन्य छात्र सूचकों के आधार पर स्किट का निर्धारण करें। (निजी परख के लिए दिए गए सूचकों (पन्ना संख्या 102) के आधार पर)
- मोबाइल या वीडियो कैमरा द्‌वारा स्किट की प्रस्तुति का रिकॉडिंग भी करें।
- इसका प्रदर्शन भी कक्षा में करें।
- अभिनेता सूचकों के आधार पर अपनी-अपनी प्रस्तुति पर स्वनिर्धारण भी करें।

विशेष ध्यान दें :

स्किट (व्यंगिका)

स्किट नाटक का ही एक संपुट (capsule) रूप है। नाटक का अपना एक स्वाभाविक आरंभ, गति और अंतिम लक्ष्य होता है। पर स्किट नाटक की संभावनाओं का फायदा उठाकर रूपायित की जानेवाली लघु रूप है। व्यंगिका की सबसे बड़ी खासियत यह है कि उसमें कम से कम समय में आशय को संवेद्‌य कराने की क्षमता है। सामाजिक दृष्टि से प्रासंगिक विषयों को स्किट के माध्यम से प्रदर्शित करके उसे लोकप्रिय बनाया जा सकता है। वर्तमान समाज में जहाँ जीवन की रफ़्तार बढ़ चुकी है वहाँ स्किट जैसी व्यंगिकाओं का महत्व बढ़ जाता है। बड़ी से बड़ी विसंगतियों को नपे तुले ढ़ंग से समय सीमा का ध्यान देकर प्रस्तुत की जानेवाली व्यंगिका देखने में छोटी लगती है, पर उससे लगनेवाली घाव गहरा होगा।

ആമ്പൽപ്പൂ വിൽക്കുന്ന പെൺകുട്ടി

പഴയ ദേവാലയം,
അരികിലാമ്പൽക്കുളം;
വഴിയിൽ പൂജാദ്രവ്യ-
വില്പനയ്ക്കോരോ കൂട്ടർ;
'ഇവിടെദ്ദേവനിഷ്ട-
നൈവേദ്യമാമ്പൽപ്പൂക്കൾ'
വഴികാട്ടിതൻ വാക്കിൻ
പൊരുൾപോലൊരു കോണിൽ,
ചത്ത നീർനാഗം പോലെ
തൂങ്ങുന്ന നീൾത്തണ്ടിന്റെ
അറ്റത്തു വിരിഞ്ഞ വെ-
ള്ളാമ്പൽപ്പൂ വിൽക്കുന്നവർ;
'എന്റെ കൈയിൽ നിന്നെന്റെ
കൈയിൽ നി' ന്നൊരു കൊച്ചു
പെൺകുട്ടിയുണ്ടെൻ മുന്നിൽ,
വാടിയ പൂത്തണ്ടുപോൽ.
ദീനമാം സ്വരത്തിലാ-
ണർത്ഥന; ഒരു കൊച്ചു
നാണയം- പൂവിൻ വില-
അവൾക്കു കൊടുത്തു ഞാൻ
എന്റെ നേർക്കവൾ നീട്ടും
പൂവുമാ മുഖവും ഞാൻ
കണ്ടു, ഹാ! വാടുന്ന ര-
ണ്ടോമനത്തങ്ങൾ : 'പൂവേ!
നീ കുഞ്ഞുപെങ്ങൾക്കന്നം-
എന്തതിൽപരം പുണ്യം?
ഈ നിന്നെ നിവേദിച്ചു
ഞാനിനിയെന്തേ നേടാൻ!....'
വെറും കൈയോടെ, നട-
ന്നകലുന്നു ഞാൻ- തേങ്ങി-
ച്ചെറുതാകുന്നൂ ശബ്ദം :
'എന്റെ കൈയിൽ നിന്നെന്റെ...'

(1984)